शब्द-शब्द पाञ्चजन्य

वागीश दिनकर

'शब्द-शब्द पाञ्चजन्य' के प्रकाशनोत्सव पर मैं अपने प्रिय कवि वागीश 'दिनकर' को हार्दिक बधाई देते हुए बड़े ही गौरव का अनुभव कर रहा हूँ. वह इसलिए कि उन्होंने अपनी छोटी सी अवस्था में ही वह कार्य कर दिखाया है जो कि उनके कवि-व्यक्तित्व में घुले-मिले गहरे सोच एवं उनकी विचार-मुद्रा का परिचय देता है. कविता सवेरा है जिसके आने पर अन्धकार सर पर पाँव रखकर भागता है. चिड़ियाँ चहचहाती हैं, फूल खिलते हैं, आँखे खुलती हैं और इसी सन्दर्भ में 'शब्द-शब्द पाञ्चजन्य' कान खोलने के साथ-साथ आँखें खोलने का काम भी कर रहा है. 'शब्द-शब्द पाञ्चजन्य' को पढ़कर कविता के सम्बन्ध में यह मधुर धारणा बनती है कि 'कविता पर केवल होठ ही नहीं, हाथ भी होते हैं'. वागीश को काव्य-प्रतिभा अपने पिता श्री रामनाथ 'सुमन' से प्राप्त हुई जो स्वयं गहन चिंतक एवं राष्ट्र भावना के मुखरित स्वर हैं अतः वागीश 'दिनकर' की कविताओं में वही राष्ट्र की चिन्ता और राष्ट्र-निष्ठा देखने को मिलती है. मैं उनके इस कविता-संग्रह पर पुनः बधाई देते हुए प्रसन्न हूँ और मुझे विश्वास है कि पाठकों को भी इस संग्रह से बहुत कुछ मिलेगा.

कुँअर बेचैन

२ एफ–५१ नेहरू नगर, गाजियाबाद

ालय

शब्द-शब्द पाञ्चजन्य

शब्द-शब्द पाञ्चजन्य

(कविता-संग्रह)

वागीश 'दिनकर'

प्रकाशक :

सादर समर्पण

स्वर्गीया **पूज्य बहिन दयावती** को जो, अपने पवित्र चारित्र्य, उदार हृदय, धर्मनिष्ठा तथा प्रेरक व्यक्तित्व के कारण सम्पूर्ण परिवार की केन्द्र बिन्दु बनी रहीं तथा जिनका कुशल कर्तृत्व अविस्मरणीय रहेगा ।

शब्द-शब्द पाञ्चजन्य

"शब्द-शब्द पाञ्चजन्य" कविता संग्रह भारत के उस इतिहास का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है जिसमें आक्रोश है, अत्याचार है, हिंसा है, हत्या है और है हिंसक उन्माद का पागलपन। समय की विभीषिका में जिस उन्मादी पागलपन की प्रतिध्वनि धरती से आकाश तक, पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक, आसेतु हिमालय मानवता की विवशताओं का एक ऐसा विवरण प्रस्तुत करती है जिसके भीतर एक आग है, एक तपन भरी अनुभूति है और मौजूद है अन्तर्मन की वेदनामय न सही जा सकने वाली विवशता।

भीतर की आग जब कभी ज्वाला बनने की कोशिश में मस्तिष्क मे एक उष्णता उत्पन्न करती है तो व्यक्ति की मन:स्थिति उस उष्णता को अभिव्यक्ति देने को लालायित रहती है। पीडा और दर्द की यही अभिव्यक्ति जब मानव मन को कुछ कहने को विवश करती है तो कही गयी वही विवश अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में कविता की संज्ञा से सम्बोधित हो जाती है। इसी सम्बोधित सज्ञा की साकार ऊर्जा का नाम है कविता और यही कविता है वागीश 'दिनकर' के इस प्रथम कविता सग्रह "शब्द-शब्द पाञ्चजन्य" की अभिव्यक्ति।

देशकाल की सीमा यद्यपि कवि को कहीं प्रतिबन्धित नहीं करती, परन्तु इतिहास स्वयं विवश करता है कि व्यक्ति, जो कि जाने अनजाने कवि भी है अपनी पीडा को, अपनी वेदना को, अपने आक्रोश को या अपने भीतर उठने वाले ज्वार का स्वरूप दे ताकि उसके मन की तपन मे कहीं शीतलता आ सके मगर शीतलता पाने की लालसा में उगली हुई वह आग तो तब तक लिपिबद्ध होकर कागज पर उतर चुकी होती है जिसे लोग कविता का नाम देकर उसको पहचान कर चुके होते है। कवि जब-जब भी इस समाज के दर्द को स्वीकारता है, महसूस करता है या जब-जब समाज की पीडाओं से जुड़ना चाहता है तो उसे अपने भीतर भी किसी अव्यक्त शक्ति से कुछ गूंज सुनाई देती है। उस गूंज में कभी

कभी स्नेह भरी शीतलता होती है कभी कभी भक्तिमयी भावना उसमे कभी न सही जा सकने वाली टीस होती है तो कभी स्वत स्फूत उपजने वाली आक्रोशमयी भाषा। इस भाषा को, इस भावना को इस स्नेहमयी शीतलता को तथा इस भक्ति की पावनता को वह मन के किसी कोने में समेटने की कोशिश करता है। वह प्रयास करता है कि इन सब को भीतर के किसी कारागृह में बन्द कर स्वयं को मुक्त कर ले मगर ये सभी प्रतिक्रियायें, ये सभी भावनायें उसे बेचैन किये रहती हैं और वह एक पागल की तरह गुनगुनाना चाहता है, वह किसी विवश व्यक्ति की तरह छटपटाना चाहता है और भूल जाना चाहता है कि उसके मन मे कहीं कुछ अनकही अभिव्यक्ति विद्यमान है। मगर जब वह पूरी तरह बेबस और बेसहारा हो जाता है तो उसकी वही गुनगुनाहट उसकी वही पीडा, वही भक्ति या वही आक्रोशमयी भावना कोई ऐसा स्वरूप ले लेती है जिसे लोग कविता कहते हैं। तब शब्द-शब्द कविता, शब्द-शब्द पीडा, शब्द-शब्द भक्ति और "शब्द-शब्द पाञ्चजन्य" बना कविता का वह स्वर अपनी गूंज से अनेकानेक प्रतिध्वनियाँ अन्तरिक्ष से भी ऊँचे किसी ऐसे लोक तक गुञ्जायमान करने में सक्षम हो जाती है, जहाँ से वह वेद की ऋचा बन सामने आती है।

बस, यही से हम पाञ्चजन्य की उस ध्वनि को कविता का रूप देकर शब्द-शब्द में केवल कविता ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं। जब क्रौंच पक्षी के पीडामय परिवेश से कविता का जन्म हो सकता है तो क्यों नही प्रत्येक शब्द के स्वर से पाञ्चजन्य का हृदय तक पहुँचने वाला काव्य हमे उद्वेलित करेगा। जब वाल्मीकि ने वियोग से उत्पन्न भीतर की पीडा को कवितामय बना दिया तो क्यों नहीं वागीश 'दिनकर' का आक्रोश साक्षात् पाञ्चजन्य का स्वर बनकर शब्द-शब्द में पाञ्चजन्य का प्रादुर्भाव करेगा। बस इसी मन: स्थिति से अभिप्रेत है इस संग्रह का सच्चा कवि, इसी अन्तर्मन की वेदना से परिपुष्ट है वागीश 'दिनकर' का कवि मन।

वागीश 'दिनकर' तो माध्यम है उस दर्द के एहसास का, वागीश 'दिनकर' तो माध्यम है उस पीडा के इतिहास का, वागीश 'दिनकर' तो नाम है उस संकल्पमय विश्वास का, जिसमें राष्ट्र को देवता मानकर उसकी पूजा में आत्मोत्सर्ग की सच्ची भावना विद्यमान है। तभी तो वह माँ सरस्वती से अपने लिये राष्ट्र की अस्मिता के प्रति सर्वस्व न्यौछावर करने का पवित्र वरदान माँगता है, तभी तो वह उद्घोष करता है राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रति अपनी मार्मिक शब्द शक्ति के माध्यम से जुड़ने का।

कवि मचो या कवि सम्मेलनो मे वागीश दिनकर लगातार अपने उस गुनगुनाने पर जो व्यक्त करता रहता है उसे लोगो का स्नेह मिला है, उसके प्रति लोगो के मन मे विश्वास का आधार है, और स्वरूप है राष्ट्रीयता को समर्पित एक सशक्त लेखन धर्मा कवि का।

शब्द-शब्द में भगवान कृष्ण के पाञ्चजन्य की हुँकार, स्वर-स्वर मे ईश्वर की गीतामय उपदेश की गरिमा और मात्रा-मात्रा में पूरे महाभारत का वातावरण कविता संग्रह का एक सम्पूर्ण आख्यान है।

"शब्द-शब्द पाञ्चजन्य" में यह सब कुछ पाठकों को पढ़ने को मिलेगा। इसलिये उन कविताओं के उद्धरण क्यों कर दिये जायें ? वागीश 'दिनकर' में जो राष्ट्रभक्ति है, जो मातृभूमि की वन्दना का सपना है और जिस तरह की परिकल्पना राष्ट्र निर्माण के लिये उनके मन में है उसकी स्वीकृति में इतना ही कहा जा सकता है कि आने वाला स्वर्णिम काल दिनकर के रूप में वागीश 'दिनकर' में विद्यमान है।

मैंने वागीश 'दिनकर' को प्रारम्भ से आज तक सुना है और इस सग्रह की कविताओं की प्रत्येक पंक्ति से मेरा परिचय है। इन पंक्तियो में ओज है, ऊर्जामय अभिव्यक्ति है और है सर्वात्मना स्वयं को होम करने की स्वीकृति।

"शब्द-शब्द पाञ्चजन्य" के पहले संग्रह में कवि ने जो भरपूर प्रयास किया है उसमें निष्ठा है, विश्वास है और है संकल्प से आगे बढने की लालसा। इसलिए पाठक इसकी उन त्रुटियों को नजर अन्दाज करेंगे जो स्वयं को प्रगतिशीलता के नाम पर साम्प्रदायिकता की व्याख्या अपने पैमाने से करते हैं। इस कविता संग्रह को छन्द, लय और स्वरों के उतार-चढ़ाव सभी आधारों से नापने का प्रयास करें, क्योंकि कविता के ये सभी आधार इसमें विद्यमान हैं।

कृष्ण 'मित्र'
१०२, राकेश मार्ग, गाजियाबाद

शब्द-शब्द पाञ्चजन्य :

अंधेरे में रोशनी की कविता.........

शिक्षित परिवारों में बच्चे का नाम रखने के लिए नामकरण सस्कार होते हैं, शब्द कोश देखे जाते हैं तथा नाम की सार्थकता पर विचार विमर्श होता है। मैं नहीं जानता इस संकलन के कवि के साथ भी ऐसा हुआ अथवा नहीं। क्योंकि कवि के पिताश्री श्रद्धेय आचार्य रामनाथ 'सुमन' स्वयं एक गम्भीर चितक, सच्चरित्र शिक्षक व श्रेष्ठ कवि होने के साथ-साथ संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित और एक चलता फिरता शब्द-कोश हैं।

अस्तु, वागीश 'कवि' का पर्याय है तथा कवि 'वागीश' का, 'दिनकर' उपनाम भी कितना सार्थक है। स्वयं जलकर दूसरों को जीवन व प्रकाश देना ही जिसका धर्म है। कारण कुछ भी हो विगत दो-तीन दशको मे जहाँ मंचीय कवियों की बाढ़ सी आई है, वहाँ जिन कवियों ने उँगली पर गिने जाने वाले कवियों में अपनी अस्मिता स्थापित की है, उनमें एक निश्छल-सा, उज्ज्वल-सा तथा समर्थ-सा नाम है 'वागीश' दिनकर'। प्रस्तुत प्रथम संकलन के कवि को कविता विरासत में मिली है. और जब कविता विरासत अथवा रक्त में मिलती है तो वह और अधिक प्रखर व मुखर होती है।

मैंने कहीं पढ़ा था 'शब्द की रसमयी उपासना ही काव्य है।' 'मौन से अनुभूति का संवाद ही कविता है।' और 'जिसने स्वयं जलकर भी अधेरों को रोशनी दी है कविता उसी समझदार संस्कृति का नाम है।' मुझे तीसरी परिभाषा का ही वागीश 'दिनकर' के साथ अत्यन्त नंकट्य प्रतीत होता है। इसके साथ ही स्मरण हो आता है, हिन्दी की साक्षात् सरस्वती श्रीमती महादेवी वर्मा का यह कथन "अपनी मातृभूमि को हम खण्डित नहीं होने देंगे, उसका अनिष्ट नहीं होने देंगे, यह सकल्प लेखको को करना है।" यह संकल्प तथा शक्ति वागीश दिनकर की कविताओ मे

देखने को मिलती है जिन्हे कवि-कण्ठ से सुनकर व पढकर रस व सुख की अनुभूति हमे होती है व एक दृढ़ प्रतिज्ञा का आभास भी।

कविता का परम सुख कवि-कण्ठ से सुनने में ही है। विगत कुछ वर्षों में मुझे अनेक बार कवि-सम्मेलनों में प्रस्तुत संकलन के कवि को सुनने का अवसर मिला है। इसमें सन्देह नहीं कि वागीश 'दिनकर' का ओजस्वी कवि निर्भीक, न्यायप्रिय व राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत जन-चेतना व जन-जागरण का होनहार कवि है। जिसका नाम ससम्मान रेखांकित किया जा सकता है। जिसके हृदय में एक तड़प है, टूटते, बिखरते भारत को बचाने की कामना है। कवि के मन में निराशा, घुटन, बेबसी के प्रति असंतोष है जो शब्दाभिव्यक्ति से कविता आक्रोश तक पहुँच जाता है। वागीश के मन में शोषित, पद दलित व दुखी मानवता के प्रति पूर्ण सहानुभूति है वह उसको न्याय दिलाना चाहता है। साथ ही सामाजिक व राजनैतिक अव्यवस्था के प्रति गुस्सा भी है। अतः कवि शासकों तक को चेतावनी दे डालता है। देश-भक्ति उसके रोम-रोम मे रमी है। 'दिनकर' का कवि विघटनकारी व षडयंत्रकारी शक्तियों का समूल नष्ट करने के लिए देश की जवानी को आवाज देता है। उसके स्वर में आह्वान भी है और हुँकार भी, आग भी है और अंगार भी।

भाषा, भाव, शिल्प तथा विचार की दृष्टि से भी लगभग सभी रचनाएँ खरी हैं। छन्द-दोष ढूंढने पर भी नहीं के बराबर मिलता है। अलंकारों का निर्वाह भी कवि ने बड़े कौशल से किया है। रसों में वीर, करुण तथा रौद्र रस से लगभग सभी रचनाएँ सिक्त हैं। लोक-मंगल की कामना तो हर कविता में परिलक्षित होती है। संस्कृत निष्ठ सरल भाषा तथा प्रवाहपूर्ण शैली रचना-सौन्दर्य तथा प्रभाव को द्विगुणित कर देते हैं। कहीं-कहीं मुहावरों तथा अपवाद स्वरूप उर्दू व अंग्रेजी भाषा के हिन्दी मे आरूढ़ शब्दों के प्रयोग कविता की सरसता को अत्यधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। कहीं-कहीं बहुत पैना व तीखा व्यंग अन्दर गहरे तक कुरेदता है। स्पष्टवादिता, निर्भीकता कवि के ईमानदार लेखन का द्योतक है। वह सजग है, और कुछ करने को उत्सुक भी। सचमुच उसका शब्द-शब्द पाञ्चजन्य ही है।

यद्यपि वागीश 'दिनकर' की लगभग हर कविता पठनीय है, तथापि 'आज मेरा राष्ट्र संकट की घटाओं से घिरा है' 'खून की पुकार' 'बापू के नाम' 'हम इतिहास लिखेंगे' 'शीश नहीं झुकने देंगे' 'संघर्ष ही जीवन है'

तथा महापुरुषों पर लिखी कविताओं में राष्ट्र की आत्मा बोलती-सी लगती है वे विशेष रूप से पठनीय हैं। कवि देश की दुर्दशा देखकर देश के कवियों का ही आह्वान कर कहता है—

ओ पवन रवि की पहुंच से भी अगम के विज्ञ कवियो।
आज मेरा राष्ट्र सकट की घटाओं से घिरा है॥

जिस देश को समस्त विश्व प्रणाम करता था उसकी वर्तमान दशा देख कवि गाता है—

आज वही भारत दुनियाँ से मिटने को तैयार।
उठो जवानो देश बचा लो, करता खून पुकार॥

भारत की सैक्युलर नीति का उदाहरण देते हुए सर्व धर्म-समभाव की भावना यों व्यक्त करता है—

फखरुद्दीन अली अहमद को, महामहिम सम्मान दिया
खान अब्दुल गफ्फार खान को, भारत रत्न प्रदान किया
जनरल मानिकशॉ मेरा रक्षक, सेनापति कहलाता
है ये कौन असभ्य मुझे जो, कुसाम्प्रदायिक बतलाता

कवि के रक्त, वाणी तथा देह में हिन्दू-हिन्दी-हिन्दुस्तान रचे-बसे है। अतः किसी मूल्य पर भी वह देश का भाल झुका नहीं देखना चाहता और कहता है—

हमने पाठ पढ़ा पुरखों से पौरुष का बलिदान का।
शीश नहीं झुकने देंगे, हम भारत राष्ट्र महान का॥

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने जिस रामराज्य की कल्पना की थी कुछ स्वार्थियों के कारण उसे टूटता देख वागीश का दिनकर चीख उठता है—

रामराज्य का स्वप्न तुम्हारा आज कल्पनातीत हो गया।
× × × × × ×
त्याग-तपस्या-सत्यवादिता, निश्छलता श्रम डूब रहे हैं।
प्रांतवाद की देख उग्रता, राष्ट्र-भक्त सब ऊब रहे हैं॥

मूल्यहीनता के वतमान समय मे कवि सघष की प्ररणा देते हुए मानता है कि बिना सघष के प्राप्ति सभव नही तभी तो पूरे राष्ट को चतावनी देता है

> बिना किये संघर्ष दशानन कब सीता को देता ।
> बिना क्रांति के दुर्योधन से कौन राजपद लेता ।।

नव पीढ़ी के नव चिन्तक, ईमानदार शिक्षक, सरस्वती के वरद्-काव्य आराधक को अन्त में सफलता की अनत शुभ कामनाओं के साथ ।

वेद प्रकाश शर्मा 'सुमन'
२-एच ५, इस्टेट मुरादनगर
गाजियाबाद (उ० प्र०) पिन–२०१२०६
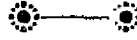
रचना-यात्रा के सोपान

विधाता की सृष्टि में मानव ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसे भाषा के रूप में अपने भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ है। स्थायी तथा संचारी सभी भावों की मुखर अभिव्यक्ति जिस व्यक्ति के द्वारा हो पाती है वह सामान्य से असामान्य होकर 'कविर्मनीषी परिभू: स्वयम्भू:' की कोटि में गिना जाने लगता है। वह अपनी सृष्टि का स्वयं स्रष्टा होता है, उसके अपने सृष्टि विधान होते हैं। इतना ही नहीं, वह विश्व को जिस रूप में देखना चाहता है विश्व उसी रूप में उसके लिए परिवर्तित हो जाता है—

अपारे काव्य संसारे कविरेव प्रजापति:।
यथास्मै रोचते विश्वं तथैव परिवर्तते।।

पूर्व पुरुषों की यह शाश्वत अनुभूति सुदूर अतीत से लेकर वर्तमान तक, आदि कवि से लेकर कविम्मन्य रचयिता तक सभी पर क्रियान्वित होती दृष्टिगत होती है। इन पंक्तियों का लेखक अपने श्रद्धेय विद्या गुरुओं, संमान्य काव्य प्रेरकों तथा समादरणीय संरक्षकों की छत्रच्छाया में अपने अध्ययन काल में ही जब लेखनी चलाने का प्रारम्भिक प्रयास कर रहा था तथा अपने पैतृक संस्कारों से दीक्षा लेकर राष्ट्रीय भावनाओं को शब्द रूप देने की चेष्टा कर रहा था तो इसे वैसे ही प्रसंग, वैसा ही साहचर्य, वैसा ही वातावरण तथा वैसा ही मंच प्राप्त होने लगा जैसा यह चाहता था। वय के अनुरूप भाव, भावों के अनुरूप भाषा, भाषा के अनुरूप अलंकार तथा अलंकृत काव्य शरीर में ओजोगुण विशिष्ट वीर रस का संचार, यही लेखक का अभीष्ट था और यही गन्तव्य, यही साध्य था और यही उपलब्धि। प्रस्तुत संकलन का प्रकाशन इसी गन्तव्य का ध्येय बिन्दु है। तीन भागों में विभक्त रचनायें जहाँ राष्ट्र के ऐतिहासिक महापुरुषों की गौरव गाथा को उपजीव्य बना रहीं हैं, जहाँ राम के पावन जन्म स्थान पर मन्दिर निर्माण के वर्तमान लक्ष्य को छू रही हैं, वहीं प्रेरक महापुरुषों की जयन्तियों के माध्यम से भविष्य के लिये दिशानिर्देश

कर रही हैं इस प्रकार काव्य का शाश्वत रूप सहृदय पाठकों को यहाँ देखने को मिलेगा।

अपने अभीष्ट गन्तव्य तथा साध्य तक पहुँचने के लिये इस बाल रचनाकार को अक्षर ज्ञान से लेकर काव्य स्वरूप परिचय तथा काव्य मच के लिये अपेक्षित संप्रेषणीयता आदि साधन जुटाने में जिस सहज कृपा-करुणा का प्रसाद प्राप्त होता रहा है वह निश्चित ही पूर्वजन्म के पुण्यों का प्रताप है। अन्यथा—'प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहु साधनता:' अर्थात् विधि के प्रतिकूल हो जाने पर साधनों को विफल होते किसने नहीं देखा ? राणा कालिज पिलखुवा के मेरे अक्षर प्रदाता गुरु तथा श्रद्धय पिताजी के साथी होने के नाते मेरे चाचा जी डॉ० श्याम॰ वीर सिंह रघुवंशी, डॉ० जगदीश चन्द्र गुप्त, डॉ० बदन सिंह राघव तथा डॉ० चन्द्रपाल शर्मा का वरदहस्त जहाँ मेरी वाणी को परिष्कृत करता रहा है वहीं सम्मान्या डॉ० रमा सिंह का सतत शुभाशीर्वाद मेरे बालकवि को पोषण प्रदान करता रहा है। लाजपत राय कालिज साहिबाबाद के मेरे विद्या गुरु श्रद्धेय डॉ० गणेशदत्त शर्मा प्राचार्य को अकारण करुणा तो अवर्णनीय ही है जिनका कृपा प्रसाद मैं 'संस्कृत प्रवक्ता' के रूप में भी प्राप्त कर रहा हूँ।

मेरी काव्य-यात्रा के प्राथमिक विश्रान्ति केन्द्रों पर पद्मश्री पं० क्षेम चन्द्र 'सुमन', डॉ० ब्रजेन्द्र 'अवस्थी' तथा माननीय मधुर शास्त्री का मधुर मांगलिक साधुवाद मेरा पवित्र पाथेय रहा है। कविता की वर्ण-माला का यथार्थ ज्ञान कराने के लिए मेरे श्रद्धास्पद श्री कृष्ण 'मित्र' तथा डॉ० कुँअर 'बेचैन' जितना स्नेहाशीष प्रदान करते रहे हैं वह मेरी अक्षय धरोहर है। प्रो० वासुदेव शर्मा (मेरठ), प्रो० बेदार 'सरस', श्री जीत सिंह 'जीत', कविवर राजेन्द्र 'राजा', रमेश बाबू व्यस्त (दिल्ली), भाई कमलेश मौर्य तथा प्रो० ओमपाल सिंह 'निडर' सदृश मेरे परमहित-चिन्तकों ने मुझ अकिञ्चन को मंच प्रदान करके मेरे उत्साह में आशातीत वृद्धि की है। संस्कारभारती के श्री योगेन्द्र जी व बांकेलाल गौड़, मातृ-तुल्या डॉ० पद्मा 'साधिका' तथा बलिदानी गाथाओं के गायक श्री वेद प्रकाश 'सुमन' मेरे शीर्ष पर आशीष तथा पीठ पर प्रेरक पाणिप्रसार करते आ रहे हैं, श्रद्धेय अग्रज हरिओम पँवार का अपार प्यार मुझे हर क्षण दुलराता रहता है। इन सभी उदार चरितों का ऋण मैं विनतभाव से स्वीकारता हूँ। मेरे भौतिक साधनों में अध्यात्म शक्ति का संचार करने

वाली तरुणसाध्वी ऋतम्भरा व डा० सुधा शिशोदिया का मैं हृदय से आभारी हूँ जो मेरे बालकवि की भावनाओ मे नित्य नूतन निखार लाने की प्रतीक्षा में रहती हैं।

काव्य सर्जन की दिशा में मुझे श्रद्धेय पिताजी आचार्य रामनाथ जी 'सुमन' से जहाँ पदे-पदे परिमार्जन का पाठ मिलता रहा है वहीं मेरा सारा परिवार मेरी रचनाओं को बार-बार सुन-सुनकर समय-समय पर मुझे सामा यक सुझाव देता रहा है। 'सीम' उपनाम से कविता करने वाले श्रद्धेय ताऊ जी श्री गंगाराम शर्मा, व 'हितैषी' उपनाम से रचना करते रहे पूज्य चाचा जी श्री भगवत् प्रसाद शास्त्री का तो सक्रिय शुभाशीर्वाद मुझे आज भी मिल रहा है। धौलाना में स्थापित 'साहित्यिक विचार मंच' के संरक्षक विद्या वृद्ध श्री मेघनाथ सिंह शीशौदिया तथा श्री शिवानन्द शर्मा का संरक्षण तो मुझे मिला ही है, मेरे श्रद्धेय गुरूजी श्री त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, ताऊ जी डॉ० शिवदत्त पाराशर (हापुड़), श्रद्धेय चाचा जी श्री गजेन्द्र दत्त गौड़, श्री रामलखन शर्मा 'संकोची' व श्री मलखान सिंह चौहान का भाव व भाषा के परिष्कार में निरन्तर मार्ग-दर्शन मिलता रहा है। 'भारतीय साहित्य परिषद्' के तत्त्वावधान में आयोजित गोष्ठियों में मुझे प्रोत्साहित करने वाले मेरे अग्रजों, मित्रा तथा अनुजों की लम्बी मालिका होते हुए भी मैं सर्व श्री आर० सी० धर्मदासनी, ओमपाल 'भय्या', कबूल सिंह विक्रान्त, सतीश चन्द्र 'निराश', कुँवर पाल कोमल, राज सिंह 'प्रशान्त', सुखवीर जैन, गोपाल 'रसिक' व पत्रकार श्री नौनिहाल का स्मरण किये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि इनके साहचर्य ने मुझे काव्य सृष्टि की दृष्टि प्रदान की है।

काव्य रचना की आठ-नौ वर्षों की इस अल्पकालिक यात्रा में मुझ सरक्षण, प्रेरणा, सहयोग तथा प्रोत्साहन के अगणित दिशा केन्द्र प्राप्त हुए हैं। सौभाग्य से, मैं इन सभी केन्द्रों से कुछ न कुछ दिशा प्राप्त करता आया हूँ। यही कारण है कि मंच प्रसारण, मंच संयोजन के सोपानों पर आरूढ़ होने के उपरान्त मैं प्रकाशन जैसे दुर्गम सोपान पर भी चलने का प्रयास कर रहा हूँ। अपने क्षेत्र की साहित्यिक प्रतिभाओं का 'प्रतिभा' के रूप में प्रकाशन करके मैं अपने संकलन को मुद्रालय तक ले चलने की चेष्टा कर बैठा हूँ। इस दिशा में वीर रस के अग्रणी गायक श्री कृष्ण 'मित्र' जी ने भूमिका प्रदान करके मुझे खड़ा किया तो राष्ट्र कवि श्री डॉ० ब्रजेन्द्र

अवस्थी, श्री हरिओम पवार व श्री वेदप्रकाश 'सुमन' ने अपनी सस्नेह सम्मति प्रदान कर मेरी मति को गति दी। प्रसिद्ध गीतकार डॉ० कुअर बेचैन' ने आवरण को वर्ण ही नहीं संकलन को संज्ञा देकर वस्तुतः 'शब्द-शब्द को पाञ्चजन्य' ही बना दिया। विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री आदरणीय अशोक जी सिंहल ने प्रशस्ति पुरःसर साधुवाद देकर जहाँ मुझे प्रोत्साहित किया, वहीं भारतीय जनता पार्टी के कर्णधार श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने मेरी पाण्डुलिपि को ध्यान-पूर्वक पढ़कर कई मौखिक सुझाव देकर अपनी सहानुभूति छापने का आग्रह करके अपने कवि-हृदय का परिचय दिया है। संकलन प्रकाशन की यह यात्रा अपूर्ण ही रह जाती यदि प्रसिद्ध पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल का प्यार भरा परामर्श मुझे पद-पद पर न मिला होता। मैं इन सब शुभ-चिन्तकों का श्रद्धा-पूर्वक स्मरण कर कृतज्ञता प्रकाशित करने का अनिवार्य कर्त्तव्य निभा रहा हूँ।

अन्त में, प्रिय भाई बिजेन्द्र सिंहल ने संग्रह की आवरण सज्जा करके तथा आदरणीय भाई राजकिशोर जी व श्री हरीश जैन ने मुद्रण का दायित्व लेकर जो मुझे निश्चिन्तता प्रदान की है, इसके लिए मैं इनका भी आभार प्रदर्शन करता हूँ। मुझे विश्वास है कि मुझ अकिंचन का यह शब्द योजन प्रयास राष्ट्र की सेवा करने वाले राष्ट्र भक्तों की सेवा सामग्री का अंग बनकर अपनी कृतार्थता व्यक्त करेगा। सुधी हृदय पाठकों का सत्परामर्श मेरे लिए सदा प्रतीक्षित रहेगा।

विनत अभिवादन के साथ—

श्री कृष्ण जन्माष्टमी सं० २०४७ वि० — विनीत

१४–८–६० ई० — वागीश 'दिनकर'

अनुक्रमणिका

(क) हम इतिहास लिखेंगे

(ख) राम के पावन स्मरण पर

(उ) कुछ जयन्तियाँ : कुछ स्मरण

हम इतिहास लिखेंगे...........

माँ ! दे वह आशीष

स्वरों-व्यंजनों, शब्दों-वाक्यों, सर्ग-प्रबन्धों को निर्मात्रि !
शब्दार्थालंकृतियों, यतियों, समता-लय-गतियों की धात्रि !
माँ वागीश्वरि ! मेरे सिर पर कर करुणा धर दे करुणाकर
मेरे शब्दों की गागर में भर दे रसभावों का सागर

माँ ! मैंने छल दम्भ छोड़कर पकड़ा है बस आँचल तेरा
मैं असहाय दीन याचक हूँ माँ ! तू एक सहारा मेरा
माँ ! मेरा उद्देश देश की पीडा को मुखरित करना है
निष्प्राणों में प्राण, तेज बलहीनों में साहस भरना है

दलबन्दी की दल-दल से माँ ! मेरा चेतन हंस दूर है
राष्ट्रभाव गर्जन सुनकर ही सुख पाता मन का मयूर है
मेरा चातक चित्त चाहता नभ में स्वाति मेघ मँडरायें
भावों की सीपी में पड़कर बिन्दु-बिन्दु मुक्ता बन जाये

मुक्तामा को माल्य गूथकर राष्ट्रभक्त का मैं पहनाऊं
उसके अभिनन्दन-वन्दन मे मैं श्रद्धा के गीत सुनाऊँ
माँ ! तेरो वीणा की तन्त्री मेरे स्वर को मन्त्र बना दे
शब्द-शब्द को पाञ्चजन्य कर निद्रा तन्द्रालस्य भगा दे

तेरी चरण वन्दना मातः ! तत्त्वदर्शिका सिद्ध रसायन
तेरी निष्कारण करुणा का सबके लिए खुला वातायन
आज राष्ट्र का क्षितिज घिरा है राष्ट्रघातिनी सघन घटा से
माँ ! दे वह आशीष बवंडर छटें सभी दिनकरच्छटा से
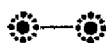
आज मेरा राष्ट्र संकट की घटाओं से घिरा है

ाज की कलिका कलुष बन जायगी कल, जानता हूँ
आज की बदली घटा बन जायगी कल, मानता हूँ
आज की राका अमा का रूप कल लेगी, पता है
आज की सुविधा बनेगी कल व्यथा, पहचानता हूँ

ल जिन्हें देखा कसम खाकर मुझे अपना बताते
आज वे ही नाम मेरा पूछते अनजान बनकर
सोचता हूँ यही युग का सत्य है अथवा कि भ्रम है
जो विनत रहते पदों में वही आते अकड़ तन कर

ह हमारे पूर्वजों का तीर्थ पावन सोचकर यह
स्वर्ण मन्दिर मध्य कल ही किया तन-मन-धन समर्पण
किन्तु कैसा समय बदला वाह रे गुरु, बताओ तो
आज वह है सिर्फ सिक्खों का न हिन्दू का पदार्पण

अभी अब ही तो हुई है चुप धरा है धैर्य माँ ने
अभी तो विच्छिन्न अंगों से रुधिर ही बह रहा है
जल उठे क्यों पूर्वी और पश्चिमी आँचल धरा के
अमृतसर में विषैला कलुषित सलिल क्या कह रहा है

ओ पवन-रवि की पहुँच से भी अगम के विज्ञ कवियो !
आज मेरा राष्ट्र संकट की घटाओं से घिरा है
तुम सभी माँ भारती के चरण रज-कण की शपथ लो
राष्ट्र सेवा में हमारे प्राण-मन अर्पित गिरा है
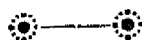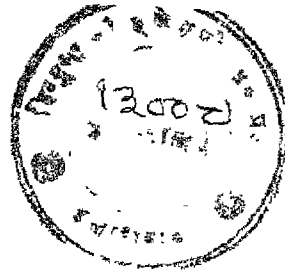
संघर्ष ही जीवन है

इस जीवन को संघर्षों ने जो गतिदान किया है
उसकी आंशिक तुलना में भी किसने स्थान लिया है
किसे शान्त होकर बैठे रहने से मान मिला है
बिना व्यजन ताडन के घर में कब पवमान हिला है

नहीं पिघलता हेम न जब तक ज्वाला दहकाओगे
नहीं योग और क्षेम न जब तक घर्षण अपनाओगे
नहीं उगलती धान्य धरा जब तक नहीं रौंदी जाती
नहीं मिलेगा रत्न खान जब तक नहीं खोदी जाती

भारत को स्वातन्त्र्य मिला है लम्बे संघर्षों से
इसका क्रान्ति बिगुल बोला है कितने ही वर्षों से
बिना किये संघर्ष दशानन कब सीता को देता
बिना क्रान्ति के दुर्योधन से कौन राजपद लेता

बिना किये संघर्ष निजामी दौलत कैसे आती
बिना क्रान्ति के दीख रही पंजाब भूमि निज जाती
हा ! गुरुओं का प्रान्त पराया सा बनता जाता है
प्रतिदिन हिन्दू-हिन्दू की हत्या करता जाता है

वीरो ! संघर्षों की लौ से जीवन दीप जलाओ
शूरो ! क्रान्ति कसौटी पर निज काञ्चन देह चढ़ाओ
हुआ मृत्यु संघर्ष कहीं तो जीवन नया मिलेगा
सुमनों के उर में अथवा द्युति भर 'दिनकर' चमकेगा

व्यर्थ और विस्तार सार है इतना ही कहने का
मूलमन्त्र संघर्ष सदा सुख से जीवित रहने का
यही पुरुष का धर्म शान्ति के हेतु क्रान्ति अपनाये
यही शास्त्र का मर्म क्रान्ति में किन्तु अनीति न आये
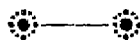
हम न कभी भूलेंगे

जिनके जीवन के पल-पल की गाथा है बलिदानी
हम न कभी भूलेंगे उन पुरखों की अमर कहानी

यौवन का उन्माद जिन्हें सत्पथ से डिगा न पाया
शूर्पणखाँ का आकर्षक शृंगार लगा छल माया
शापानल सह लिया रूप का सागर डुबा न पाया
माता कह अप्सरा उर्वशी को निराश लौटाया
उन लक्ष्मण-अर्जुन से वीरों की आदर्श जवानी
हम न कभी भूलेंगे उन पुरखों की अमर कहानी

खिलजी के मनसूबों की फसलों पर वज्र गिराकर
जहाँ पद्मिनी की रक्षा करते हैं गोरा-बादल
कर्मवती का जग-जाहर जौहर जिसने देखा था
जहाँ दूध के साथ पिया करते शिशु कुम्भा-कौशल
वह जैमल-फत्ता वीरों की धरती राजस्थानी
हम न कभी भूलेंगे उन पुरखों की अमर कहानी

अरि के अरमानों को जिसने सदा चुनौती माना
आन-बान को स्वाभिमान को सदा बपौती जाना
आँखों की पुतली इकलौती सुता सदा को सोई
फिर भी माँ मेवाड़ भूमि की महिमा को सन्माना
उस राणा के शोणित की रग-रग में भरी रवानी
हम न कभी भूलेंगे उन पुरखों की अमर कहानी

जिसने पूज्य पिता की बलि देकर कश्मीर बचाया
चार-चार लाडले लुटा कर हिन्दू ध्वज फहराया
आँखों में अंगारे लेकर और खड्ग में पानी
जो प्रचण्ड चण्डी चरित्र लिखकर दशमेश कहाया
सवा लाख से एक लड़ाने आया गोविन्द ज्ञानी
हम न कभी-भूलेंगे उन पुरखों की अमर कहानी

जिनकी साँसों के स्वर में तूफान उठा करते थे
अरि के दम्भ-दलनकारी आह्वान उठा करते थे
चेहरे पर अरुणोदय जिनकी हुँकारों में ज्वाला
चाहों में भारत माँ के अरमान उठा करते थे
उन शेखर-बिस्मिल-सुभाष का शौर्य तेज लासानी
हम न कभी भूलेंगे उन पुरखों की अमर कहानी
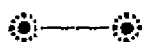
खून की पुकार

आज राष्ट्र में मचा हुआ है चहुँदिशि हा-हाकार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

दुनियाँ के राष्ट्रों में जिसको प्रथम गिना जाता था
प्राणिमात्र का हित चिन्तन ही जिसे सदा भाता था
जिसने देव सृष्टि के पोषक यज्ञों को अपनाया
लड़ें न भाई-भाई परस्पर यह गुरुमंत्र पढ़ाया
आज वही भारत दुनियाँ से मिटने को तैयार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

भारत माँ ने हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख भेद कब माना
ईसाई-पारसी-यहूदी को भी अपना जाना
राजगुरू, अशफाक, भगतसिंह इसके ही बेटे हैं
पीकर इसका दूध इसी की गोदी में लेटे हैं
आज परस्पर क्यों लड़ते हो कुछ तो करो विचार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

विश्व सराहे जिसे राष्ट्र जन में वह प्रीत नहीं है
विश्वनाथ पर छत्र चढ़ाये वह रणजीत नहीं है
बचा सके हिन्दुत्त्व नहीं अब तेग बहादुर मानी
देव-विप्र-गौओं के रक्षक कहां वे गोविन्द ज्ञानी
रोग असाध्य हुआ जाता है कुछ तो करो विचार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

गुरुओं की सन्तान मान मर्यादा खो बैठी है
पा रिपु का सहयोग दम्भ अभिमान लिए ऐंठी है
लक्ष्मण स्वयं लांघकर रेखा सीता को हरता है
आज भरत के हाथों भारत का राघव मरता है
धरती बोझिल हुई पाप का बढ़ता जाता भार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

तुम यदि सोते रहे देश की रक्षा कौन करेगा
कौन चुनौती स्वीकारे जब यौवन मौन धरेगा
क्या वीरों की वीर भावना यों ही सुप्त रहेगी
भारत माता क्या जग में यूं ही अपमान सहेगी
क्या अपने पुत्रों पर इसका रहा नहीं अधिकार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

फिरसे तुम्हें जगाने आया जलियाँ वाला बाग
एक नहीं सौ-सौ ओ डायर खेल रहे हैं फाग
वीरो संघर्षों की लौ से जीवन दीप जलाओ
शूरो क्रांति कसौटी पर निज कांचन देह चढ़ाओ
हत्यारों का नाम मिटा दो कर दो धूंआधार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार

बाबर है परकीय महाराणा साँगा अपने हैं
रामजन्म भू, कृष्णजन्म भू विश्वनाथ अपने हैं
अपना है कश्मीर स्वर्ण मन्दिर अमृतसर अपना
फिर बोलो क्यों देख रहे हो खालिस्तानी सपना
'दिनकर' चमक उठा है अब यह स्वप्न न हो साकार
उठो जवानों देश बचालो करता खून पुकार
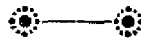
हम इतिहास लिखेंगे

हमें स्वार्थ की घटा हटाकर नयी प्रभा छिटकानी है
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

हमने मनु के चारु चरित शिक्षण को चुना चुनौती में
हिमगिरि का उत्तुंग शिखर है हमको मिला बपौती में
हम ऊंचे आदर्शों को नभ से भूतल पर लाते हैं
हम रत्नाकर गंगा का भू पर अवतरण दिखाते हैं
इतिहास बनाने वाले हम बनते इतिहास कहानी हैं
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

हम शैशव में गिन सिंहों के दाँत अनेकों बार हँसे
हम यौवन में शूर्पणखाँओं उर्वशियों में नहीं फंसे
हम गुरुवर वशिष्ठ के चेले नहीं राज्य पर मरते हैं
अग्रज की ले चरण पादुका चौदह वर्ष गुजरते हैं
भ्रातृघातिनी औरंगजेबी दुनियाँ हमें मिटानी है
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

सागर की छाती पर पत्थर तराना अपनी थाती
तीन डगों में यहाँ विश्व भर की धरती नापी जाती
अत्याचारी दुःशासन का रक्त चाटते वीर यहाँ
शरणागत के रक्षण हित रण में डटते हम्मीर यहाँ
यहाँ राष्ट्र की बलिवेदी पर बलि देते बलिदानी हैं
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

हम सीमा के प्रहरी पुरु का स्वाभिमान दर्शायेंगे
मौर्य शौर्य के साथ राष्ट्र गुरु गौरव गान सुनायेंगे
संघर्षों से आजीवन जूझे मेवाड़ी मतवाले
खोकर सिंह सिंहगढ़ की मर्यादा को रखने वाले
वीर प्रतापों-शिवराजों को हमको गाथा गानी है
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

हमे व्यक्ति पूजा से हटकर राष्ट्र अर्चना करनी है
जाति नहीं मानव में गुण गौरव की महिमा भरनी है
शोषण-अत्याचार - निरंकुशता - हिंसा-तानाशाही
ये अभारती तत्त्व यहाँ इनकी होली जलती आयी
होली के इन मस्त जवानों में नव ज्योति जलानी है
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है

चाटुकारिता के दिन बीते अन्ध समर्थन का युग बीता
अपनों के द्वारा अपनों की बात न सुनने का युग बीता
राष्ट्र भारती के आराधक मालवीय टण्डन की वाणी
अब नूतन इतिहास लिखेगी और भरेगी नयी रवानी
नही कृपा पर स्वाधिकार पर हिन्दी बननी रानी है
हम इतिहास लिखेंगे उनका जिनकी सजग जवानी है
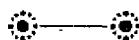
शीश नहीं झुकने देंगे

हमने पाठ पढ़ा पुरखों से पौरुष का बलिदान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

हम शिव के सुत कार्तिकेय हैं क्रीडांगन कैलास है
देवों का सेनापति बनना यह अपना इतिहास है
पंचशील का इस जग को देते आये सन्देश हैं
संयम से रहते आये हैं सहते आये क्लेश हैं
किन्तु नहीं छोड़ा है हमने साहस शर सन्धान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

हम दशरथ के आज्ञाकारी ठुकराते साम्राज्य हैं
कर्मयोग हो हमें ग्राह्य है विषय भोग सब त्याज्य हैं
ऋषियों-मुनियों-मित्रों के हित चले हमारे बाण हैं
रक्षणीय की रक्षा कर दुश्मन के लेते प्राण हैं
लंका से बढ़ हमें गर्व गौरव है माँ की शान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

विश्वविजेताओं को टक्कर देने वाले हम पुरु हैं
विष्णुगुप्त-चाणक्य हमारे राष्ट्रमन्त्र दीक्षा गुरु हैं
शक-हूणों आक्रान्ताओं को हम विक्रम विकराल हैं
बाप्पा रावल के सैनिक हम अफगानों के काल हैं
हमने काटा जाल शिवा बन अफजल के अभिमान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

जिस दु:शासन के शासन में सूर्य नहीं छिप पाता था
धरती और आकाश रात-दिन जिसका गौरव गाता था
कूटनयिक चालों में जो भूचाल उठाया करता था
वैचारिक आक्रमणों से संस्कार मिटाया करता था
हमने बिस्तर गोल कर दिया उस इंगलिश शैतान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

त्याग-तपस्या-क्षमा-धीरता हमको मिली बपौती में
हमें झिझक लगती संघर्षी भाषण और चुनौती में
किन्तु हमें जब अबल जानकर शत्रु चुनौती देते हैं
तो हम उनके जरासन्ध सम दो टुकड़े कर देते हैं
सवा लाख का आत्मसमर्पण विस्मय विश्व महान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

जिसको हमने पाला वह नेपाल त्यौरियाँ बदल रहा
द्वार झाँकने वाला देखो आज ड्यौढ़ियाँ बदल रहा
इसने हमको समझा है केवल भोला शिव भण्डारी
नहीं दिखाया इसको हमने रौद्र रूप प्रलयंकारी
हमें फोड़ना है भ्रम का घट अब तो इस नादान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

आज हमारे अरुणाचल पर नीच चीन फिर मंडराया
पाक लिये नापाक इरादे सिक्खों के सिर पर छाया
तमिलों को कह भारतीय लंका नित बम बरसाता है
पगला बंगला चकमाओं के धड़ से शीश उड़ाता है
हमें चतुर्दिक शंखनाद करना है विजय विहान का
शीश नहीं झुकने देंगे हम भारत राष्ट्र महान का

राजनीति के अहिरावण से

ओ धर्मनीति के विद्रोही ओ अर्थनीति के अधिनायक
विध्वंसक हिन्दु सभ्यता के ओ राजनीति के खलनायक
श्री मती इन्दिरा की जघन्य हत्या से जब था देश व्यथित
भारत की शासन सत्ता का सिंहासन जब देखा विचलित

तेरे हाथों सौंपी थी तब मैंने सत्ता की बागडोर
हो कोई निश्छल निशकलंक शासक अधिकारी यही सोच
लेकिन तूने तो फेर दिया पानी सारी आशाओं पर
तू लगा वज्र बनकर गिरने संस्कृति की हरित लताओं पर

तू भूल गया मैं धर्मप्राण हिन्दू भारत का शासक हूँ
तू भूल गया मैं युग-युग की माटी का विनत उपासक हूँ
तुझको चिन्ता है केवल मैं कैसे जीतूं अगला चुनाव
वोटों के बैंकों पर कैसे मैं डाल सकूं अपना दबाव

इस स्वार्थसिद्धि के साधन मे तू सारी शक्ति जुटा बैठा
पद की गरिमा यश की महिमा तू भारत भक्ति लुटा बैठा
इसके हित करना पड़े तुझे संस्कृत भाषा का बहिष्कार
इंगलिश को बना महारानी सब भाषाओं का तिरस्कार

तो यह सब कुछ करने में तू सत्तालोलुप क्यों चूकेगा
तू भूल गया यह वस्तुस्थिति भावी युग तुझको कोसेगा
तू पन्द्रह और पिचासी को एक ही गणित से आँक रहा
भारत की छत पर बैठा है इंगलिश खिड़की से झाँक रहा

आक्रान्त और आक्रान्ता में तू अन्तर तनिक न मान रहा
इसलिये मौहम्मद बिन कासिम को धर्म सुधारक जान रहा
भारत का हिन्दू जाग गया हो सावधान सत्ता लोभी
जो इसका रक्षक होगा यह सत्ता सौंपेगा उसको ही

हिन्दू के घर में अब हिन्दू अपमान नहीं सह पायेगा
हिन्दू की धर्मधरा पर अब शैतान नहीं रह पायेगा
मन्त्रों का निर्माता हिन्दू षड्यन्त्रों का संहारी है
शासन बगुलों का देख लिया अब तो हंसों की बारी है

२८-५-८६
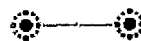
मेरा भारत महान

एक समय था जब भारत में अंग्रेजों का शासन था
गोरा रंग था किन्तु कलंकित दिल्ली का सिंहासन था
अंग्रेजों की कूटनीति ने बीज विषैला बोया था
भरत खण्ड की अखण्डता का भाव धरा पर सोया था

स्वाभिमान की आभा नभ में नहीं दिखाई देती थी
चाटुकारिता दब्बूपन की घटा दिखाई देती थी
युग ने करवट ली जनता ने क्रान्ति दिशा पहचानी थी
बूढ़े हाथों में लाठी शोणित में नई रवानी थी

आजादी की बोली तब यौवन सुभाष बन बोला था
तब मोती का लाल जवाहर गाँव-गाँव में डोला था
खण्ड-खण्ड भारत में तब जागा था निर्भय स्वाभिमान
नेहरू के संग बच्चा-बच्चा बोला मेरा भारत महान

लेकिन यह कैसी विडम्बना यह कैसा दृश्य विचित्र हुआ
मेरे रहते मेरे भारत महान का खण्डित चित्र हुआ
भारत की सीमायें सिकुड़ी सिकुड़ा भारत का स्वाभिमान
आचार सिमट कर छिपा कहीं फिर भी मेरा भारत महान

मेरे सूरज में ठण्डक है मेरे चन्दा में गर्मी है
मेरे फूलों में सख्ती है मेरे पत्थर में नर्मी है
मेरे कमलापति दिल्ली में दिल जीत रहे हैं यवनों का
शाही शरणागत विश्वनाथ है स्वप्न सजाते भवनों का

मेरा शासक मेरे घर में चाँदनी फूट की बाँट रहा
हिंसा के सिंही काँटों से जन-जन के मन को काट रहा
न्यायालय के आदेशों का उल्लंघन करने वालों को
महिलाओं का जीवन यापन पोषण धन हरने वालों को

करके प्रसन्न यह संविधान की हत्या तक कर सकता है
फिर भी मेरा भारत महान कहने का दम भर सकता है
आतंकवाद की छाया में गुण्डागर्दी का अगुआ बन
उत्कण्ठित युद्ध जीतने को मेरे प्रदेश का नारायण
मेरी पंजाब धरित्री हा बनती जाती सूना मसान
सिद्धार्थ सभी कुछ देख रहा फिर भी मेरा भारत महान

मेरी हिन्दी पर उर्दू का है हृदय विदारक दुष्प्रहार
असुरों के भय से आतंकित हैं राम भक्त अब्दुल गफ्फार*
भस्मासुर शहाबुद्दीनों को संरक्षण चन्द्र शेखरों का
रक्षकों सैनिकों पर छाया है भय आतंक बर्बरों का
अब कैसे आयेगा मेरे स्वर्णिम युग का स्वर्णिम विहान
मैं कब गा पाऊँगा निर्भय होकर मेरा भारत महान

२४-११-८९
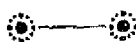
१. राजस्थान का युवा राष्ट्रवादी मुसलमान कवि, जिसे तथाकथित 'बाबरों' ने जान से मारने की धमकी दी थी।

बन्धो ! कर्तृत्व कसौटी है

मेरे भारत की नौका के ओ चिर आकाँक्षित कर्णधार
मेरी संचित आशाओं के ओ कल्पवृक्ष दानी उदार
मेरी हरियाली के पोषक ओ शोषक व्यग्र व्यथाओं के
विकलों के आश्वासन दायक ओ नायक कलित कथाओं के

तुमको जनता ने माना है दुर्दान्त दानवों का द्रोही
भ्रष्टाचारी वृत्रासुर का संहर्ता निर्मल निर्मोही
कोई भी तुमको परखेगा यदि दलगत आग्रह को तजकर
तो निश्चय ही वह पायेगा तुममे निश्छल व्यक्तित्व प्रखर

तुम सर्वदली निर्णय लेकर आदर्श बनाना चाह रहे
जसी जनता की चाह रहे वैसी शासन की राह रहे
लेकिन बन्धो यह ध्यान रहे कुछ तत्व स्वार्थी होते हैं
राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध ये बीज स्वार्थ के बोते हैं

मजहब के भारी बाटों से ये सत्ता को तोला करते
शासक का सिंहासन डोले ऐसी बोली बोला करते
तुम मान्धाता के वंशज हो शासन सत्ता के सूत्रधार
दीनों के दाता विश्वनाथ क्रूरों के कण्ठों के कुठार

तुम भी यदि तुष्टीकरण लिये ढूंढोगे रोगों का निदान
तुम भी यदि निर्बलता लेकर पहुँचोगे करने समाधान
तो बोलो फिर भारत माता किस पर विश्वास जमायेगी
वीरों की जन्म धरा कैसे वीर-प्रसवा कहलायेगी

लेकर प्रताप यदि सिंह सदृश मानी उन्मत्त हाथियों को
रौंदोगे नहीं अनाचारी, पापी, खूंख्वार दरिन्दों को
तो, सत्ता के परिवर्तन का कैसे आभास दिलाओगे
गुण्डागर्दी के मर्दन का कैसे इतिहास बनाओगे

पहले शासक ने छोड़ दिये माँ की हत्या के षडयन्त्री
घुटने टेके तब ले पाया पुत्री भारत का गृहमन्त्री
मेरे राघव की जन्मधरा अब भी स्वाधीन न हो पाई
कश्मीरी केसर की क्यारी समता के बीज न बो पाई

नापाक दरिन्दे रौंद रहे कश्मीरी केसर की क्यारी
लाखों हिन्दू घर उजड़ गये लाखों पर पड़ी भीड़ भारी
शिविरों में तड़प रहे नंगे भूखे शरणार्थी बेहिसाब
उस ओर मकबरों में गूंजा अल्ला हो अकबर बेनकाब

तुमने कल ही उद्घोष किया–'हम सब मन से तैयार रहें
जो असहनीय सह लिया उसे रोकें हम रिपु पर वार करें
पर इसे क्रियान्वित करने को क्या आप स्वयं तैयार सखे ?
क्या राष्ट्र सुरक्षा हित होंगे निःशंक शत्रु पर वार सखे

ऐसा करने पर आप बुखारी खार पचा पायेंगे क्या
मुल्क के मुकाबल मजहब की मान्यता घटा पायेंगे क्या
यदि सचमुच राष्ट्र सुरक्षा हित अविचल संकल्प तुम्हारा है
तो बोलो अब तक बनी हुई क्यों तीन सौ सत्तर धारा है

मेरे नानक का ननकाना अब भी भारत से बाहर है
फिर भी शिष्यों की तरुणाई भारत विघटन को तत्पर है
अल्फा की विषम समस्या से मेरा आसाम कराह रहा
फिर भी मेरा पहला शासक विद्रोही नीति सराह रहा

ऐसी अनगिनत समस्या हैं ऐसी अनगिनत चुनौती हैं
इन सबका समाधान करना बन्धो कर्तृत्व कसौटी है
ऐसी कर्तृत्व कसौटी पर जब खरे उतर पाओगे तुम
तब विश्वनाथ प्रताप सिंह सचमुच ही कहलाओगे तुम
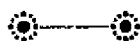
रहे अक्षय राष्ट्र की संस्कृति

प्राण-तन-अन्तःकरण में एक अविरत साधना है
रहे अक्षय राष्ट्र की संस्कृति यही आराधना है

वेद का उपदेश-मिल बोलो, चलो, मिलकर विचारो
उपनिषद् कहते-हटाओ प्रेय से मन, श्रेय धारो
विपुल भोगों से कभी मानव नहीं संतृप्त होता
त्याग, संयम ही मनुज के चित्त में शम-बीज बोता

यही शम का बीज जीवन मे फले, यह कामना है
रहे अक्षय राष्ट्र की संस्कृति यही आराधना है

राष्ट्र का आधार है सौभ्रात्र-रामायण सिखाती
परस्पर विद्वेष में है कुलक्षय-गीता बताती
मुझे भारत में भरत की भ्रातृनिष्ठा जगानी है
द्वेष-कलमष-विषमता की वृत्ति जड़ से मिटानी है

'संघ सम्पत' मन्त्र में एकत्त्व की ही भावना है
रहे अक्षय राष्ट्र की संस्कृति यही आराधना है

भूत भवन शम्भु से मैंने पराथ व्रत लिया है
स्वयं विष पीकर सुधा का दान देवों को दिया है
मैं कुशल कौटिल्य रिपु की कुटिलता पहचानता हूँ
राष्ट्र रक्षा हित पिनाकी रुद्र बनना चाहता हूँ

मृत्यु से क्या भीति, मेरा लक्ष्य काल-उपासना है
रहे अक्षय राष्ट्र की संस्कृति यही आराधना है

शास्त्र मेरे सकण्टक पथ को सुगम आया बनाता
शक्ति का वरदान मेरे पदों पर युग को झुकाता
शील का सामर्थ्य मेरा ध्येय जीवन-व्रत रहा है
विनय-विद्या का अजस्र-स्रोत रग-रग में बहा है

कर्म करता ही जिऊँ शत वर्ष प्रभु से प्रार्थना है
रहे अक्षय राष्ट्र की संस्कृति यही आराधना है
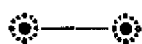
है यह कौन असभ्य

मैं भारत का भाग्य विधाता जग संस्कृति का निर्माता
है यह कौन असभ्य मुझे जो कुसाम्प्रदायिक बतलाता

दुनियाँ के पीडित धर्मों को मैंने ही विश्वास दिया
सब राष्ट्रों से बहिष्कृतों ने इसी धरा पर वास किया
पारसियों क्या यहूदियों तक की भी मैंने रक्षा की
बना विश्व को शिष्य जगद्‌गुरु बनकर मैंने कक्षा ली
मुझ उदार की गौरव गाथा जगती का मानव गाता
है यह कौन असभ्य मुझे जो कुसाम्प्रदायिक बतलाता

मेरी धरती पर कबीर ने निर्भय सबद सुनाये हैं
मेरे महामना तुलसी ने रहिमन के गुण गाये हैं
फखरुद्दीन अली को मैंने 'महामहिम' सम्मान दिया
खान अब्दुल गफ्फार खान को 'भारतरत्न' प्रदान किया
जनरल मानिकशा मेरा रक्षक सेनापति कहलाता
है यह कौन असभ्य मुझे जो कुसाम्प्रदायिक बतलाता

ओ मेरी भारत माता के खण्ड-खण्ड करने वालो
ओ मेरे ही अन्न वस्त्र से मेरे घर पलने वालो
तुम मेरे श्रद्धा केन्द्रों को नित अपमानित करते हो
नित नूतन संदेश सुनाकर अलगावी स्वर भरते हो
इतने पर भी मैंने तुमसे माना भाई का नाता
है यह कौन असभ्य मुझे जो कुसाम्प्रदायिक बतलाता

मेरी धरती पर रहकर भी गीत विदेशी गाते जो
मेरी देव दक्षिणा से ही शिक्षा-दीक्षा पाते जो
मेरा प्यारा नाम भुलाकर नागालैण्ड बनाते जो
मेरे सन्तों ऋषि-मुनियों को 'इण्डियन डौग' बताते जो
सावधान हों, मैं उन सबका समाधान करने आता
है यह कौन असभ्य मुझे जो कुसाम्प्रदायिक बतलाता

ओ सैक्यूलर बनने वालो सावधान मैं जाग उठा
राष्ट्रद्रोहियों का पोषण करने वालो मैं जाग उठा
हिन्दू के घर हिन्दू को दलने वालो मैं जाग उठा
ओ वोटों की राजनीति चलने वालो मैं जाग उठा
हिन्दू भारत, भारत हिन्दू, हिन्दू ही जग का त्राता
है यह कौन असभ्य मुझे जो कुसाम्प्रदायिक बतलाता

तब प्रणय ढूंढना कविता में

जब कोई कवि माइक पर आ अपना सन्देश सुनाता है
सन्देश सुनाने से पहले अपने को कवि बतलाता है
कहता है मैं कवि हूँ जो भी देखूंगा वही सुनाऊँगा
निन्दित को निन्दनीय कहकर अभिनन्दित के गुण गाऊँगा

चारण या चाटुकार बनकर स्तुति गाना मुझे नहीं आता
मैं वाल्मीकि का वंशज हूँ जन-गण-मन की पीड़ा गाता
मेरी रचना की तपोभूमि हर निर्वासित का आश्रय है
अपराधी सम्राटों तक को मुझ निर्भय से लगता भय है

कवि का यह आत्म-प्रशंसी रुख सम्भवत: तुम्हें अखरता हो
उसके कहने में दम्भ-दर्प-अभिमान-घमण्ड छलकता हो
श्रोता के नाते तुम जैसा चाहो वह वैसा ही गाये
तुम जब चाहो वह इठलाये तुम जब चाहो मुस्काये
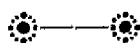
उसको अधिकार दिया किसने जो मनमानी कविता बोले
जो है तुम सब का गोपनीय वह उसको क्यों नाहक खोले
कवि सम्मेलन का संयोजक तुमसे ही पैसा लाता है
जो चाहोगे पढ़वाऊँगा तुमको विश्वास दिलाता है

फिर माइक पर आकर कवि की क्यों तुम्हें सहन हो मनमानी
राष्ट्रीय भाव, लोकाराधन, आदर्श वाक्य सब बेमानी
जिस रचना में उन्माद न हो फूटें न हँसी के फव्वारे
तरुणाई अंगड़ाई लेकर झूमे न प्रेयसी के द्वारे

वह रचना क्या तुकबन्दी है कवि सम्मेलन उपदेश स्थल
कवि क्या भजनीक महाशय हैं संचालक गुरुकुल का शिक्षक
लेकिन भाई तुम ही सोचो क्या कवि कोई अभिनेता है
कवि को कविता अभिनेत्री है क्या यह परिहास प्रणेता है

गुदगुदी उठाने को ही क्या कवि ने वाणी की पूजा की
क्या कामुकता बरसाने में ही सार्थकता है कविता की
जोकर जोकर दिखलाता है क्या वही कर्म है कवि का भी
नर्तकी वार वनिता जैसा आचरण बने कविता का भी

बोलो इस कवि सम्मेलन को चाहते बनाना नौटंकी
या चाह शमाँ के दीवाने उन परवानों के महफिल की
बन्धो ! इस कवि सम्मेलन को कवि सम्मेलन ही रहने दो
इन कवियों को भारत माँ की संतति की पीडा कहने दो

बहने दो इन श्रोताओं को करुणा की निर्मल सरिता में
विपदा के घन जब छंट जायें तब प्रणय ढूंढना कविता में
तब तक तो कवि को कवि कहकर अपना सन्देश सुनाने दो
जन की पीडा में रोने दो जन के उत्सव में गाने दो
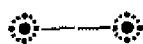
यह कैसा है स्वातन्त्र्य दिवस ?

जब से नेहरु ने स्वतन्त्रता के स्वागत दीप जलाये हैं
तब से भारत की पुण्यधरा पर अगणित पतझर आये हैं
पतझर पहले भी आते थे तरु-तन को नग्न बनाते थे
पर कभी-कभी तो वासन्तिक झोंके तब भी आ जाते थे

यह कैसा है स्वातन्त्र्य दिवस यह कैसी पायी आजादी
यह कैसी उत्सव की बेला यह कैसी है उज्ज्वल खादी
यौवन की आशा में निराश होकर शैशव दम तोड़ रहा
कुटिया में जन्मा कुलकपूत कुटिया से नाता तोड़ रहा

रक्षा का भार दिया जिसको वह भक्षक आँखें फोड़ रहा
दैवी विपदा का लाभ उठा व्यापारी दौलत जोड़ रहा
आजादी का सुख भोग रहे गुण्डों की टोली गाती है
बलिदानी पुरखों की आँखें आँसू की नदी बहाती है

घर-परिवारो मे सम्बन्धो की तोड़-फोड़ का शोर मचा
चौराहों और बाजारों में अपहरणों की घनघोर घटा
कॉलिज, कार्यालय, फैक्टरियाँ जहाँ देखो अजब तमाशा है
कर्त्तव्यों के अक्षर भूले सीखी अधिकारिक भाषा है

मेरे भारत की धरती पर पूरब में असम समस्या है
पश्चिम में गुरुओं की भू पर हिन्दू की निर्मम हत्या है
मेरे उत्तर में फारूखी और चंगेजी षड्यन्त्र बढ़ा
मेरे हरिभक्तों के सिर पर पैट्रोडालर का रंग चढ़ा

मेरे दक्षिण में दैत्यों की लंका में हा-हाकार मचा
जो भारतवासी हो मारो यह कहकर नंगा नाच नचा
मेरी हिन्दी साम्राज्ञी पर अंग्रेजी दासी हावी है
चिन्ताकुल मेरा वर्तमान शंकाकुल मेरा भावी है

जो बलिदानों के वंशज थे जो आजादी के सूत्रधार
जो नभ के चाँद-सितारे थे धरती के फूलों के सिंगार
उनको कलुषित नेताओं ने दुःस्वप्नों जैसा भुला दिया
मन में जो भाव सँजोये थे उनका सिंहासन डुला दिया

श्रम की देवी का लक्ष्मी से पहले पूजन करना होगा
भारत के मूक प्रजाजन में निज भाषा स्वर भरना होगा
स्वाधीन धरा की वेदी पर फिर स्वर्णिम युग लाना होगा
'यह राष्ट्र हमारा अमर रहे' यह वृन्द गीत गाना होगा
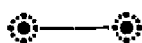
नयन में नीर है

आज मानवता व्यथित क्यों, विश्व क्यों गम्भीर है
हर हृदय संतप्त क्यों है, क्यों नयन में नीर है

क्या किसी दुधमुंहे शिशु की पूज्य माता चल बसी
या किसी परिवार को लाचार करती बेबसी
क्या किसी असहाय का अन्तिम सहारा छुट गया
या किसी नवयौवना का प्राण प्यारा लुट गया
क्यों धरा ने धैर्य खोया क्यों हिमाद्रि अधीर है
हर हृदय संतप्त क्यों है, क्यों नयन में नीर है

क्या किसी की प्रेरणा का स्रोत बहता रुक गया
या किसी की कल्पना का फहरता ध्वज झुक गया
क्या किसी की मधुर वीणा की छिनी है रागिनी
या किसी पूनम सुहानी ने गंवायी चाँदनी
चकोरी चिल्ला उठी क्या लगा कोई तार है
हर हृदय संतप्त क्यों है, क्यों नयन में नीर है

रो रहा घर द्वार आँगन रो रही है घर दिशा
रो रहा है दिवस का मन रो रही पावन निशा
राष्ट्र की जो देवता थी इन्दिरा वह सो गयी
राष्ट्र की जो एकता थी इन्दिरा वह खो गयी
राष्ट्र का वैभव लुटा कुण्ठित हुई तकदीर है
हर हृदय संतप्त क्यों है, क्यों नयन में नीर है

देह की रक्षा जिन्हें सौंपी वही भक्षक बने
पिलाया जिनको सदा अमृत वही तक्षक बने
लोरियों से भरी छाती गोलियों से छिद गयी
ढह गया विश्वास मन का मातृ ममता बिंध गयी
स्वयं पुत्रों ने उतारा आज माँ का चीर है
इसलिए हर हृदय विह्वल, हर नयन में नीर है

कौन अब पीडित जनों की दूर कर पीडा घनी
बनायेगा भरत भू को विश्व में मानी धनी
कौन भूले पथिक को आलोक पथ दिखलायेगा
राष्ट्र मन्दिर में सुनहरा दीप कौन जलायेगा
प्रश्न उत्तरहीन हैं सब शान्त मौन समीर है
इसलिए हर हृदय विह्वल, हर नयन में नीर है
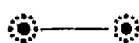
पन्द्रह अगस्त आया ?

स्वाधीन देश वालो पन्द्रह अगस्त आया
सोचो-विचारो क्या ये खुशियाँ नयी है लाया

पहले की भाँति अब भी चलती यहाँ है गोली
खूनों की रात-दिन ही खिलती यहाँ है होली
करते रहे जो हत्या खुशियाँ मना रहे हैं
सच जो भी कोई बोले आपत्ति पा रहे हैं
तुम कैसे आज कहते नूतन प्रभात आया
स्वाधीन देश वालो पन्द्रह अगस्त आया

कल तक थे जो भी प्यासे वो आज भी हैं प्यासे
जो न्याय माँगते हैं मिलते उन्हें गंडासे
मजदूर को न रोटी दो वक्त मिल रही है
उसकी व्यथा कहानी मालिक ने कब कही है
दिन-रात भूख सहते हुई जीर्ण-शीर्ण काया
स्वाधीन देश वालो पन्द्रह अगस्त आया

आजाद जिनके बल से हम-तुम सभी हुए हैं
इतिहास लेखकों ने वे नाम कब छुए हैं
जिनके दुराचरण से है तंग आज पीढ़ी
सरकार दे रही है उनको मचान सीढ़ी
सत्कर्म सूखता है दुष्कर्म है सवाया
स्वाधीन देश वालो पन्द्रह अगस्त आया

पंजाब की कहें क्या जलता है देश सारा
आतंक बढ़ रहा है शासक विवश हमारा
दिन-रात उग्रता का बेरोक सिलसिला है
अपराधियों को बोलो यहाँ दण्ड कब मिला है
भय का भयावना घन नभ में अन्धेरा छाया
स्वाधीन देश वालो पन्द्रह अगस्त आया

लुटते रहेंगे क्या यूँ भारत के प्यारे सपने
मरते रहेंगे यूँ ही क्या नित्य बन्धु अपने
यदि टीस है दिलों में चुपचाप क्यों पड़े हो
स्वाधीनता दिवस है ललकारता खड़े हो
नव जागरण का यह दिन सन्देश नव्य लाया
स्वाधीन देश वालो पन्द्रह अगस्त आया
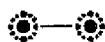
तुम कितने निष्ठुर हो यार !

सुबह चाय के साथ पढ़ गए आँसू में डूबा अखबार
इस पन्ने से उस पन्ने तक मचा हुआ है हाहाकार
तुम कितने निष्ठुर हो यार, तुम कितने निष्ठुर हो यार

छाप-छाप हिंसा की खबरें सम्पादक भी धीरज खोता
लूट मार के समाचार हैं कागज का अन्तर्मन रोता
कहीं बाढ़ रूपी दानव ने है भीषण उत्पात मचाया
सूखे ने भूखे मानव को कहीं काल का ग्रास बनाया
कहीं गैस रिसने की घटना कहीं हुआ अपहरण किसी का
घर की ज्वाला में ही जलकर लिखा हुआ है मरण किसी का
हा, दहेज ने विषधर बनकर किसी अभागिन को खाया है
और किसी मासूम लहू ने बलिवेदी को दहलाया है
चुस्की ले-लेकर पी डालीं तुमने इतनी करुण पुकार
तुम कितने निष्ठुर हो यार, तुम कितने निष्ठुर हो यार

मध्य पृष्ठ का चित्र देखकर काँप रही अम्बर की छाती
नन्ही और अबोध बालिका चिर निद्रा में सोये जाती
वह एक मासूम कली थी जिसने जीवन नहीं जिया है
क्रूर वासना के पंजों ने उसका बचपन नोंच लिया है
दर्दनाक चित्रों में देखो उस डाकू का अत्याचार
भून दिया जिसने गोली से मार दिया सारा परिवार
आँखें ठण्डी लाशें देखें होठों को गरमाये प्याला
चाय नहीं पी तुमने मानों पतझर में पढ़ दी मधुशाला
जाने हजम किया है कैसे तुमने इतना नरसंहार
तुम कितने निष्ठुर हो यार, तुम कितने निष्ठुर हो यार

मातृभूमि के लिये सिखाया हमको है वीरों ने जीना
इसीलिए गाँधी, जे० पी० ने छोड़ दिया था खाना-पीना
पर अलगाववाद का खतरा आज देश पर मडराया है
भारत को खण्डित करने हित उग्रवाद बढ़ता आया है
ऐसी खबरें पढ़ लीं तुमने मुख से निकली नहीं हाय भी
कुछ मिनटों के लिये बताओ तुमसे छूटी नहीं चाय भी
केस मिलावट के सुन-सुनकर सबको आती आज रुलाई
घी में पशुओं की चर्बी पढ़ आई नहीं तुम्हें उबकाई
हृदय भावनाओं को तरसे किन्तु उदर को सब अधिकार
तुम कितने निष्ठुर हो यार, तुम कित ने निष्ठुर हो यार

राम के पावन स्मरण पर............
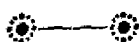
है मेरा उद्‌घोष

मेरी माँटी में माता जैसा दुलार है
मेरे हर कण में मानव को अमिट प्यार है
नहीं विरोधी कभी मोहम्मद मैंने माना
शान्ति-अहिंसा का प्रतीक ईसा को जाना

सदा जायसी को कबीर के साथ बिठाया
और सूर के साथ सदा रसखान सजाया
तुलसी जैसा ही रहीम मुझको प्यारा है
नरशह बाज सखा है आँखों का तारा है

मैं हमीर शरणागत प्राणों से प्यारा है
जिसके ऊपर राजपाट धन-मन हारा है
किन्तु दया को मूर्ख मान बैठा कायरता
जिस हाँडी में खाता छेद उसी में करता

मेरे टुकड़ खाता मुझको ही गुर्राता
कृतज्ञता का भाव हृदय में तनिक न लाता
अतः जगा प्रहरी नगेश लेकर अंगड़ाई
लगी उबलने मेरे सागर की गहराई

जाग गये हैं नीलकण्ठ के विकट विषैले
है किसमें सामर्थ्य हलाहल इनका झेले
महारुद्र ने नेत्र तीसरा खोल लिया है
वीरभद्र ने हर-हर बम-बम बोल दिया है

मेरे राघव ने अमोघ शर सन्धाना है
अब लक्ष्मण ने अग्निबाण फिर से ताना है
देखें बाबर अवधपुरी कैसे आयेगा
भूल करी अल्ला को प्यारा हो जायेगा

मात बाबरी हुई बाबरे ही जनमेंगे
ये गीता की यदा-यदा को क्या समझेंगे
नहीं किसी के द्वारा इसका वध हो पाया
तभी सार्थक नाम अवधपुर इसने पाया

मेरे मोहन की मुरली गीता गायेगी
शीघ्र बाबरी कौरव सेना भग जायेगी
मार मेरे बाप्पारावल की भूल गये हैं
कन्दुक क्रीडा में जीते क्या फूल गये हैं

जिस क्षण मेरे सुभट समर में जुट जायेंगे
छक्के मारों के सब छक्के छुट जायेंगे
आज धनन्जय ने गाण्डीव उठाया कर में
देखेंगे अब कौन डटेगा यवन समर में

शब्द भेदने वाले शर मुझ पर चौहानी
बार अनेकों भूला गोरी अजाँ लगानी
काले मुंह वाले खिलजी क्यों बात बनाता
मेरा गोरा खड़ा समर में तुझे बुलाता

मैंने नलवा की कटार कटि में बाँधी है
शूर शिवा की चन्द्रहास कर में साधी है
देखेंगे अब कौन यवन रण में ठहरेगा
नहीं अवध काबे में केसरिया फहरेगा

है मेरा उद्घोष सावधानी से रहना
राम भूमि को कभी बाबरी मत कह देना
कठिन पड़ेगा अरे अन्यथा प्राण बचाना
अथवा भारत छोड़ पड़ेगा मक्का जाना
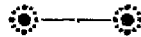
राम विरोधी को सिंहासन का अधिकार नहीं है

घटनाएँ यों तो जीवन में घटती रहतीं हैं
घटती भी हैं घटने पर फिर बढ़ती रहतीं हैं
समय बीतता जाता है विस्मृति हो जाती है
बीती कथा काल कवलित होकर खो जाती है

किन्तु कभी कोई ऐसी घटना घट जाती है
युगों-युगों तक जिसकी स्मृति रह-रह आती है
ईसा की बीसवीं शती का नौवाँ दशक महान्
जिसका नौवाँ वर्ष नवासी घटनाओं की खान

इसके माह नवम्बर की नौवीं तारीख अजेय
जिसमें घटना घटित रहेगी युगों-युगों तक गेय
मर्यादा पुरुषोत्तम जन-गण-मन अधिनायक राम
जहाँ पहुँच पीडित प्राणी को मिलता है विश्राम

उनकी पावन पुण्य जन्मभू पुरी अयोध्या प्यारी
जिसे बताते आये ऋषिजन तीन लोक से न्यारी
उसके जिस आँगन में प्रभु ने अपना रूप दिखाया
यशोमूर्ति विक्रम विराट ने मन्दिर वहाँ बनाया

विश्ववन्द्य राघव का वह मन्दिर इन्दिरा सदन था
जगती का गौरव था भारत माँ का जीवन धन था
आक्रान्ता बर्बर बाबर ने उस पर कहर ढहाया
पापी ने तोपों से उसका वैभव धूलि बनाया

शताब्दियों से जन-जन का आक्रोश जुड़ा था इससे
रोष ध्वंस में, रचना में सन्तोष जुड़ा था इससे
भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक मन्दिर यह
दुनियाँ के हिन्दू की गरिमा का प्रतीक मन्दिर यह

विश्व राट सम्राट राम का मन्दिर दिव्य बने फिर
रोम-रोम में रमे राम का मन्दिर भव्य बने फिर
शिलान्यास हो यथा शीघ्र यह सबकी अभिलाषा थी
हिन्दु जगे तो विश्व जगेगा यह निश्चित भाषा थी

राम कृपा से कोटि-कोटि हिन्दू का पौरुष जागा
अकर्मण्यता, अविश्वास का कुण्ठा का भय भागा
रामभक्त जागे धरती पर देव स्वर्ग में जागे
हर्षित हुए भाग्यशाली जन रोने लगे अभागे

साधु, सत, ऋषियों, मुनियों ने किया भूमि का पूजन
शिलान्यास करने को पहुँचे लक्ष्याधिक हिन्दूजन
शंख सहस्रों ध्वनित हो उठे बजे बिगुल और भेरी
अगणित कण्ठ पुकार उठे हे राम लला जय तेरी

सैनिक बल शस्त्रास्त्र सुसज्जित मस्तक झुका रहा था
बजरंगी दल उछल-उछल कर उत्सव मना रहा था
नव्य भव्य भावों के मुकुलित शतदल वहाँ खिले थे
शताब्दियों के बाद भरत को रघुवर आज मिले थे

शिलान्यास की यह घटना युग-युग तक याद रहेगी
शासन के परिवर्तन की गाथा यह नित्य कहेगी
सच पूछो तो इस घटना का केवल सार यही है
राम विरोधी को सिंहासन का अधिकार नहीं है
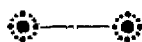
जीवन दीप जलाकर

जीवन दीप जलाकर भारत माँ की हम अर्चना करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना करेंगे

हम सच्चे सैक्यूलर हमने केवल राष्ट्र धर्म स्वीकारा
जाफर जयचन्दों से जालिम जिन्नाओं से किया किनारा
अपने श्रद्धा केन्द्र बिन्दु पर अपने राष्ट्रिय स्वाभिमान पर
जो भी चोट करेगा अपनी आन-बान पर शान-मान पर
हम ऐसे विकराल व्याल की डटकर मुख मर्दना करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना करेंगे

लाला सैयद नर शाहबाज पठान हमें प्राणों से प्यारे
अशफाकुल्ला और हमीर हैं हम सब की आँखों के तारे
निवेदिता भगिनी, नौरोजी, मानिकशा कब रहे पराये
जो भी माँ के रहे दुलारे गीत उन्हीं के हमने गाये
किन्तु मोहम्मद बिन कासिम को हम कैसे सत्पुरुष कहेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना करेंगे

ताब्दियों से हमने अपना असली रूप नहीं पहचाना
नर-नाहर होकर भी हमने भीरु भेड़ अपने को जाना
राम-कृष्ण-शिव की धरती पर सहते रहे खड़ी मीनारें
चिने गये गुरुपुत्र जहाँ पर रहे देखते वे दीवारें
अब सूझा है हम अपने अपमानों का प्रतिकार करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना करें

ाग गया परमाल चन्देला छत्रसाल बुन्देला जागा
जाग गये महाराणा कुम्भा अब हम्मीर हठीला जागा
शक्तावत चूड़ावत जागे जागी झाँसी वाली रानी
मदन धींगड़ा जाग गया अब जागा भगत सिंह अभिमानी
तूफानी जागरण लिये ये बैरी का संहार करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना करें

रुणाचल के शिखरों पर फिर भास्कर वर्मा का ध्वज फहरा
आज अगस्त्यों कौण्डिन्यों ने नापा फिर रत्नाकर गहरा
रिपु का दम्भ दलन करने को फिर नलवा हुँकार उठा है
बजरंगी भुजदण्डों में फिर शत्रुजयी खुम्मार उठा है
नहीं मृत्यु का, अमर वीर ये विजयश्री का वरण करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना क

ते हैं हम शपथ भरत की चौदह वर्ष तपस्या वाली
हम लेते हैं शपथ बुद्ध की वैभव छोड़ प्रव्रज्या वाली
हमें शपथ है मथुरा काशी और अयोध्या परमधाम की
हमें शपथ है विश्वनाथ की राघवेन्द्र की घनश्याम की
तीनों देव धराओं पर हम मन्दिर का निर्माण करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना क

शब्द-शब्द पांचजन्य/वागीश 'दिन

मेरे मर्यादा पुरुषोत्तम राम सभी के अर्चनीय हैं
मेरे शंकर विश्वनाथ हैं कृष्ण जगद्गुरु वन्दनीय हैं
इनका सीमित क्षेत्र समझकर जो भी जब भी मार्च करेगा
इनके भक्तों का क्रोधानल उसका तब ही दहन करेगा।
हम हैं कालनेमि के हन्ता हर कुचक्र का दमन करेंगे
जग जननी के पद पर माँ की पुनः प्रतिष्ठापना करेंगे
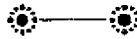
फिर प्रलयंकर घन छाये

आज हमारी राष्ट्रधरा पर फिर प्रलयंकर घन छाये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

जब आता है याद वर्ष सैंतालिस जी भर आता है
लाखों हिन्दु बन्धुओं की हत्या की याद दिलाता है
मिला हमें स्वातन्त्र्य किन्तु माँ की प्रतिमा के खण्ड हुए
कटा शीश कश्मीर, पंचनद, बंग, असम भुजदण्ड कटे
कोटि-कोटि जन जन्म-जन्म के लिए विदेशी कहलाये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

देशभक्त नेताओं के हाथों ने ऐसा घात किया
वीर हकीकत, भगतसिंह के हत्यारों को मात किया
सती पद्मिनी का जौहर और लक्ष्मीबाई का बलिदान
व्यर्थ गया नेता सुभाष का निर्भय वैदेशिक प्रस्थान
रोई रावी बिलखी सतलज अश्रु सिन्धु ने छलकाये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

कुछ था अवशेष उसी को हमने भारत मान लिया
किन्तु शत्रु चुप बैठ न पाया हमको निर्बल जान लिया
सिक्खों को भड़का यह खालिस्तान बनाना चाह रहा
आज फूट के बीज फले सारा पंजाब कराह रहा
सिंहद्वार रक्षक ने देखो भक्षक पंजे फैलाये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

ोच रहा है अरुणाचल के आँचल को दुःशासन चीन
उधर निगलना चाह रहा है बंगला सीमावर्ती मीन
इधर राम की जन्मभूमि को फिर से ताक रहा बाबर
महाराणा के वंशधरों को फिर ललकार रहा अकबर
आज जरूरत है शूरों के शोणित में गर्मी आये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

ब सुन लें अब जाग उठा है प्रलयंकर ताण्डवकारी
पार्थ धनुर्धर जाग उठा अब जागा भीम गदाधारी
देश विभाजन भूमिहरण का अब इतिहास न दोहरेगा
अब तो ढाका और करांची पर राष्ट्रध्वज फहरेगा
शान्ति धीरता का युग बीता अब गीता के दिन आये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

ाष्ट्रएकता लक्ष्य हमारा भक्ष्य बनेंगे व्यवधायक
हम मित्रों को परम मित्र हैं किन्तु खलों को हम सायक
उग्रवाद-आतंक-तास्सुब सबको कर देंगे निर्मूल
शाहबुद्दीन, सुलेमानों को चटवा देंगे भू की धूल
कृष्णचन्द्र हैं रक्षक अपने जो चाहे सो अजमाये
देखें कौन प्रभंजन बनकर इन्हें रुई सा छितराये

न्द-शब्द - /वागीश 'दिनकर'

शोणित हर घर-द्वार बहेगा

आदिकाल से अब तक मैंने जग को अपने गले लगाया
निराहार रह-रहकर मैंने गैरों को भोजन करवाया
कभी नहीं इच्छा की मैंने औरों से कुछ भी पाने की
कभी नहीं धमकी दी मैंने धर्म किसी का छुड़वाने की
इसीलिए मेरे आंगन में निर्भय ईशु पुत्र रहता है
बिना हिचक के मुसल्मान भी अल्ला हो अकबर कहता है
क्षमा भाव से मौन रहे हम सहकर गोरी के घातों को
और शान्त हो रहे देखते सोमनाथ पर आघातों को
उसका ही परिणाम हुआ यह भारत माँ को कटवा डाला
हमने फिर भी यही सोचकर मुंह पर डाले रक्खा ताला
मुस्लिम हिन्दू राष्ट्र नाम से जब यह भारत बंट जायेगा
तब आपस का कलह यहां से सदा-सदा को मिट जायेगा
वाह रे भारत के नेताओ ! पाल लिया फिर भी साँपों को

ये भारत को क्या छोड़ेंगे काट दिया अपने बापों को
सब कुछ सहते युग बीते हैं सहने की भी सीमा होती
अधिक रगड़ लगने से देखो अनल प्रकट चन्दन से होती
करने दिया इन्हें मनमानी तभी हुए आपे से बाहर
राघवेन्द्र को भूल गये ये याद रहा बस केवल बाबर
रोम-रोम में रमे राम की जन्मभूमि पर नित रहते है
फिर भी राघव के मन्दिर को बाबर की मस्जिद कहते है
अब जागा हिन्दुत्व देश का यह इतिहास नया गायेगा
हम देखेंगे बर्बर बाबर कैसे अवधपुरी आयेगा
महाराणा के वंशधरों ने उठा लिया अब कर में भाला
नहीं बचा पायेगा इनसे उनको उनका अल्ला-ताला
सावधान अब जाग गया है वीर बहादुर हरिसिंह नलुआ
देश धर्म के विरोधियों का क्षण में कर डालेगा हलुआ
महारुद्र की शिव सेना अब ले त्रिशूल निर्भीक चलेगी
इसे रोकने का यदि साहस किया प्रलय की ज्वाल जलेगी
जन्मभूमि को कहा बावरी जीभ खींच करके रख देंगे
नीच बाबरों के शोणित से हिन्द महासागर भर देंगे
अगर हिलाई अंगुलि भी तो भुजा काटकर के रख देंगे
अगर हिलाया शीश किसी ने उसको धड़ से अलग करेंगे
अतः भूलकर राम धरा को कोई भी बाबरी न कहना
कठिन पड़ेगा तुम्हें अन्यथा राघव के भारत में रहना
जग सुन ले यदि राम धरा को कोई भी बावरी कहेगा
उसके समर्थकों का भी फिर शोणित हर घर-द्वार बहेगा

⊛——⊛

शब्द पाचजन्य/वागीश 'दिनकर'

कुछ जयन्तियाँ : कुछ स्मरण.........
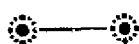
मेरे भारत की पावन पुण्य धरित्री पर
जो 'सुमन' खिले मैंने इनको श्रद्धा दी है
मेरे मन्दिर में जो भी 'मन्मथनाथ' मिले
शिवशंकर कह मैंने उनकी पूजा की है

मेरे घर-घर में 'दुर्गा' का वन्दन होता
मैं 'महावीर' का युग-युग से आराधक हूँ
मैं मूल्य समझता क्रान्ति, त्याग, बलिदानों का
इसलिए हृदय से इनका विनत उपासक हूँ

हम सबका है कर्त्तव्य प्रेरणा लें इनसे
इन बलिदानी वीरों का सम्मान करें
देश-जाति को जब हो अपनी आवश्यकता
आगे बढ़कर न्यौछावर अपने प्राण करें
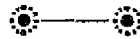
स्वतन्त्रता सेनानी

पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन', मन्मथ नाथ गुप्त, दुर्गा भाभी व डॉ० भाई महावीर का सार्वजनिक अभिनन्दन।

जन्म की पावन शती पर लो अमित उपहार केशव

राष्ट्र निष्ठा के निदेशक, विश्व के श्रृंगार केशव
जन्म की पावन शती पर, लो अमित उपहार केशव

नाम वसुधा हुआ सार्थक आपको पाकर धरा का
जवानी ने स्थान पाया हिन्दु जीवन में जरा का
आपसे ही मिली जीवन ज्योति जीवन शून्य तन को
आपकी ही राह पर चलकर मिला विश्राम मन को
देव दुर्लभ प्रेरणा प्रद वह मृदुल व्यवहार केशव
जन्म की पावन शती पर लो अमित उपहार केशव

सूर्य भी जिसके वृहत् साम्राज्य में छिपता नहीं था
जिस प्रभा के सामने कोई प्रखर टिकता नहीं था
उस विकट विक्टोरिया के शासनोत्सव की मिठाई
फेंक कर ओजिष्ठ तुमने हिन्दवी ऊर्जा दिखाई
तुम रहे बलिराम के ओजस्विता आगार केशव
जन्म की पावन शती पर लो अमित उपहार केशव

आपने तारुण्य में जिस संघ-तरु के बीज बोये
खिल रहा वह पल्लवित-पुष्पित-फलित शाखा संजोये
स्वार्थ की झंझा इसे झकझोरने चलती रही है
जाति की ज्वाला झुलसने अहर्निश चलती रही है
किन्तु यह दृढ़ मूल पाकर समर्पण सम्भार केशव
जन्म की पावन शती पर लो अमित उपहार केशव

हिन्दु माँ ने जन्म दे पाला सभी को अन्न जल से
भेद क्यों इतना वहाँ है एक बिलसे एक तरसे
जब सभी हैं सहोदर तो सभी माँ के लाडले हैं
अनुज तो सर्वत्र अग्रज गोद में रहकर पले हैं
हम सभी हैं एक यह थे आपके उद्गार केशव
जन्म की पावन शती पर लो अमित उपहार केशव

आपका आशीष पाकर ध्येय पथ पर हम बढ़ेंगे
आपसे शुभ प्रेरणा ले लक्ष्य शिखरों पर चढ़ेंगे
जाति की ज्वाला न हमको रोक पायेगी कभी भी
स्वार्थ की झंझा न हमको टोक पायेगी कभी भी
हम जलेंगे राष्ट्र हित में बन ज्वलित अंगार केशव
जन्म की पावन शती पर लो अमित उपहार केशव

वीर सावरकर के प्रति

रक्तपात की पाप पुण्यता घटना पर निर्भर है
एक समय का पाप दूसरे क्षण में पुण्य प्रखर है
निरपराध का हत्यारा यदि पापी कहलाता है
तो निश्चय ही दुष्टों का वध पुण्य गिना जाता है

इसीलिए अत्याचारी का अत्याचार मिटाओ
यदि आवश्यक रक्तपात तो मन में मत घबराओ
कंसों की क्रूरता मिटाने कृष्ण चला करते हैं
अफजल जैसे दुष्टों को शिवराज छला करते हैं

ये विचार थे मृत्युञ्जय हिन्दू-सुत सावरकर के
सहनशीलता दुनियाँ की नतमस्तक जिसके आगे
पौरुष, शौर्य, पराक्रम का था जो नगराज हिमाचल
उसके पावन चरणों में मेरी श्रद्धा हो अविचल

स्वामी दयानन्द

ज्ञान की ज्वाला जलाकर अन्धतम जिसने भगाया
काटकर पाखण्ड कण्टक सत्य का पौधा उगाया
विषधरों से घिरा रहकर भी रहा जो चारु चन्दन
उस अमर ऋषिवर्य का मैं कर रहा हूँ चरण वन्दन
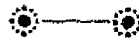
मुक्तक

राष्ट्र सूर्य पर जब संकट के घन छाते हैं
देव दीप्ति पर जब वृत्रासुर मंडराते हैं
बढ़ता जाता जब पापों का भार धरा पर
तब होता है प्रकट पुण्य 'उद्गार' गिरा पर
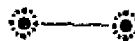
बन्दा बैरागी के प्रति

मेरा प्यारा देश सदा से सूरमाओं का देश रहा है
इसके सत्पुत्रों का इसकी रक्षा में सद्रक्त बहा है
इसके स्वाभिमान पर जब भी जिसने भी आघात किया है
इसके शूर सपूतों ने तब ही उसका प्रतिरोध किया है

यह विक्रम की मातृभूमि है यहाँ यशोधर्मा जन्मा है
इसके अरुणाचल पर ध्वज लेकर पहुँचा भास्कर वर्मा है
इसकी आन बचाने को ही न्यौछावर चह्वान हुआ था
इसकी शान-सुरक्षा हित ही गोरा का बलिदान हुआ था

वन-वन भटक-भटक राणा ने इसी देश का मान रखा था
गुरु-शिष्यों ने इसको अमर बनाने को ही अमृत चखा था
माधोदास विरागी इसके लिए बना बन्दा बैरागी
शक्ति साधना रति अपनाकर मुक्ति भावना की मति त्यागी

बन्दा जिसने गुरु-शिष्यो के घातक को यमपुर पहुँचाया
बन्दा जिसने तेगबहादुर के प्राणों का मूल्य चुकाया
बादशाह फर्रूखशीयर की जिससे नींद हराम हुई थी
यमुना से रावी तक जिसका दिन मुगलों की शाम हुई थी

बन्दा जिसने बन्दी बनने पर भी धर्म नहीं त्यागा था
अंग-अंग कट जाने पर भी मुख का तेज नहीं भागा था
वह बन्दा इस मातृ-भूमि भारत का ऐसा नौनिहाल है
जिसके शौर्य-धैर्य-साहस पर बलि-बलि जाता स्वयं काल है

ऐसे बलिदानी वीरों से माँ का ऊँचा मस्तक होता
ऐसे पुरुष प्रदीपों से ही राष्ट्रभक्ति पथ उज्ज्वल होता
ऐसे नरनाहर वीरों की जहाँ जयन्ती लोग मनाते
धन्य-धन्य वह देश जाति कविगण उसका गुण-गौरव गाते
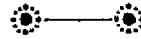
प्रताप जयन्ती : 'प्रतिमा अनावरण'

देश की स्वाधीनता जब गर्त में जाने लगी थी
जाति गौरव रवि छिपाती जब निशा आने लगी थी
वाक्य वेदों का 'धरा जीतो' न गाया जा रहा था
वचन गीता का 'लड़ो भारत' भुलाया जा रहा था

शान वीरों की न मरना आन पर जब रह गयी थी
मान की रक्षा विदेशी स्रोत में जब बह रही थी
छिप रहा था जब उदय के साथ ही मेवाड़ सूरज
माँगती थी शत्रु शोणित वीर राजस्थान भू-रज

तब हुआ माँ भारती का तापहारी प्रतापोदय
राष्ट्र गौरव को जगाता तब हुआ उद्घोष जय-जय
देश की माँटी सुनहरा रंग लेकर जगमगाई
वीर कुम्भा की जवानी बन प्रताप-ज्योति आई

धर्म के रक्षार्थ बाप्पा का विरुद आगे बढ़ा था
भाल पर रिपु के महाराणा लिये भाला चढ़ा था
वीर चेतक की कहानी महाराणा से जुड़ी है
राष्ट्र की गौरव पताका इसी के बल पर उड़ी है

कर्मवीरों ने इन्हीं से कर्म का सन्देश पाया
धर्मवीरों ने इन्हीं पावन पदों पर सर झुकाया
सकल जन आराध्य प्रतिमा का प्रतिष्ठा पर्व है यह
राष्ट्र का गौरव हमारी हिन्दवी का गर्व है यह

इसी पावन पर्व पर हम आज यह संकल्प लेंगे
राष्ट्र चरणों में समर्पित सकल तन-मन-धन करेंगे

बापू के नाम

भारत ही क्या विश्व मात्र के वन्दनीय ओ प्यारे बापू
भूतकाल ही क्या युग-युग के अर्चनीय ओ प्यारे बापू
आज तुम्हारी जन्म जयन्ती का पावन अवसर आया है
इसीलिए कुछ नम्र निवेदन गुंथ करके दिनकर लाया है

बिना तुम्हारे बापू अपनी कोई नहीं गुहार सुनेगा
राष्ट्रपिता के बिना राष्ट्र की बोलो कौन पुकार सुनेगा
बापू आज तुम्हारे सपनों का वह भारत बदल गया है
बदल गया नागरिक देश का लक्ष्य देश का बदल गया है

त्याग, तपस्या, सत्यवादिता, निश्छलता, श्रम डूब रहे हैं
प्रान्तवाद की देख उग्रता राष्ट्रभक्त अब ऊब रहे हैं
वर्गवाद बढ़ रहा दिनोंदिन दिनदूना अलगाव बढ़ रहा
रिश्वत का बाजार गरम है भ्रष्टाचारी ज्वार चढ़ रहा

ससद मे जूते चलते हैं गुण्डो के बलबूते चलते
उजड़ रहे हैं मन्दिर आंगन मदिरालय में दीपक जलते
पूँजीपतियों ने अपनाया तालाबन्दी का शासन है
मजदूरों में जहाँ देखिये हड़तालों का ही आलम है

यदि मुस्लिम महिला बिल लाकर शासन मोड़ नया लेता है
राष्ट्रगान के न बोलने की न्यायालय सुविधा देता है
आरक्षण की होड़ लगी है राज्य चाहते अनुपम दर्जा
समझौतों की बाढ़ आ रही केन्द्र दे रहा अरबों कर्जा

रामराज्य का स्वप्न तुम्हारा आज कल्पनातीत हो गया
गोरक्षा का प्रश्न यहाँ पर बापू बिसवे बीस सो गया
गया घरेलू धन्धों का युग चारण युग फिर से आया है
स्वार्थ सिद्धि हित चाटुकारिता का धन्धा सबको भाया है

त्यों-त्यों देश दबा जाता है बापू ज्यों-ज्यों दवा हो रही
तुष्टीकरण फला है ऐसा राष्ट्रएकता हवा हो रही
प्रेम भाव काफूर हो रहा द्वेष भावना जाग रही है
जाग रही पश्चिमी सभ्यता आध्यात्मिकता भाग रही है

नाम तुम्हारा लेकर भी ये नेता मनमानी करते हैं
कथनी में देवत्व किन्तु करनी में हैवानी भरते हैं
बापू चालीस साल हो गये लौटो देखो अपना भारत
देखा नहीं जा रहा हमसे हुआ जा रहा भारत गारत
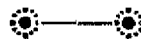
महावीर महान

अभिनन्दन करता हूँ मैं भारत की उस माँटी का
जिसे मिला सौभाग्य सदा सत्पुरुषों की जननी का
जिसने महावीर से ऐसे तीर्थंकर उपजाये
स्वयं दिशाओं ने आकर जिनको अम्बर पहनाये

संयम, त्याग, तपस्या जिनका आर्हन्ती साधन था
सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य जिनके जीवन का धन था
स्वयं इन्द्र जिनके चरणों में आकर झुक जाता था
'जय जिनेन्द्र' कहकर जग जिनका गुण गौरव गाता था

ऐसे महाश्रमण स्वामी को शीश झुकाता हूँ मैं
उनकी जन्म जयन्ती पर उनका यश गाता हूँ मैं
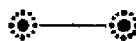
डॉक्टर अम्बेडकर

महाराष्ट्र रत्नागिरि जनपद आम्बावाडे ग्राम
जिनको पाकर धन्य हो गये बने लोक विश्राम
छूआछूत, गरीबी और विषमता हो निर्मूल
यही मन्त्र जिनके जीवन का रहा ध्येय निष्काम

सहे सहस्रों क्लेश देश हित चिन्तन कभी न छूटा
शिक्षा के उत्तुंग शिखर पर पहुँचे जो अविराम
संविधान स्वाधीन राष्ट्र का रचकर मनु कहलाये
ऐसे भीमराव को मेरा शत-शत बार प्रणाम
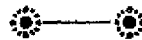
भामाशाह जयन्ती के अवसर पर

बलिदानों का साक्षी मेरा भारत राष्ट्र चिरन्तन
इसके सत्पुरुषों का इसकी रक्षा में तन-मन-धन
वैदेशिक आक्रान्ता जब भी इस पर चढ़कर आये
इसके वीरों ने इसके चरणों पर प्राण चढ़ाये

ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण इस पर करते तप न्यौछावर
जीवन की आहुति देते नित इस पर वीर धनुर्धर
वैश्यों ने इसको अपनी धनराशि समर्पित की है
शूद्रों ने इसके चरणों में निज सेवा निधि दी है

जब मेवाड़ी धरती पर मुगलों के बादल छाये
जब प्रताप के नयनों ने नैराश्य अश्रु बरसाये
तब आशा बनकर आये थे भामाशा बलिदानी
तब मेवाड़ी वीरों ने फिर से लड़ने की ठानी

अगणित योद्धा अमिट काल तक भामाशा के बल पर
फिर से जुटकर धर्मभ्रष्ट बैरी मान मिटाकर
देश जाति मेवाड़ धरा की रक्षा कर पाये थे
एकलिंग जय, जय प्रताप के शौर्य गीत गाये थे

मना रहे हम आज उसी की पावन जन्म जयन्ती
उसके चरणों की पूजा करती है ऋतु वासन्ती
कवियों ने भी काव्य कला की पाँखुरियाँ बिखराईं
'दिनकर' ने भी आज पदों को छूकर ली अंगड़ाई
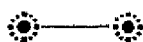
नेहरू जन्म जयन्ती

जो भारत स्वातन्त्र्य युद्ध का था निर्भय सेनानी
जिसने अपना रोष भुला बापू की आज्ञा मानी
जो समृद्धि में पलकर भी दीनों का मित्र बना था
कुसुमों की कोमलता तज काँटों की राह चला था

धनपतियों सामन्तों से जिसने नाता तोड़ा था
समाजवादी दर्शन से जिसने रिश्ता जोड़ा था
हिन्दी-चीनी भाई-भाई कहकर जो हर्षाया
जिसने गुटबन्दी से हटकर निर्गुट विश्व बनाया

राष्ट्रवाद भी जिस हस्ती को छोटा सा लगता था
अन्तर्राष्ट्रीय भाव बोध जिसमें अविरत बहता था
वह मोती का लाल जवाहर सब बच्चों का चाचा
उसके गौरव की गरिमा को किस गिरिवर ने जाँचा

उसकी गहराई को समता सागर कब कर पाया
देश काल सीमा मे वह नरनाहर कब बँध पाया
गंगा की लहरों का कलरव उस नेहरू का स्वर था
कमलावरण करे जीवन में यह देवों का वर था

भारत माँ का वह सपूत युग-युग तक अमर रहेगा
दुनियाँ का बच्चा-बच्चा नेहरू की कथा कहेगा
बच्चों के चाचा का जन्म-दिवस ही बाल-दिवस है
इसी दिवस को 'दिनकर' अर्पित करता भाव सरस है
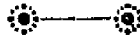
सरदार पटेल जयन्ती के अवसर पर

देश की धरती बंटी जब प्यार जन-जन का बँटा था
युगों का बलिदान सागर ज्वार क्षण भर में घटा था
रो उठे थे सिन्धु, सतलज ढक गया था शौर्य सूरज
छिन गया था गेह दाहर का छिनी थी मौर्य भू-रज

देखता था राष्ट्र आहत राष्ट्र ऐसे ही क्षणों में
मिले कोई वैद्य मरहम लगाये बहते व्रणों में
सकल जन-मन प्राण वल्लभ वीर नरनाहर मिला तब
जुड़ा टूटा हृदय माँ का वैभवी गौरव खिला तब

सियासत का बल निजामी रियासत का काल था वह
सौम्य को था सौम्य विकटों को विकट विकराल था वह
गजनवी के ध्वंस में निर्माण का चन्दन बना वह
उसी के कारण हमारा राष्ट्र नन्दन वन बना यह

भारती के उस दुलारे लाल का वन्दन करें हम
उसे मस्तक पर लगाकर काव्य अभिनन्दन करें हम

 /वागीश दिनकर'
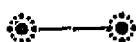
कविवर पंत

जय जयन्ती पर्व के वरणीय कविवर पंत प्यारे
जय सुखद शुभ कल्पनाओं के परम आश्रय हमारे
जय कला की मोहिनी प्रतिमा द्रुमों की मृदुल छाया
जयति वीणा के मधुर स्वर जय प्रकृति की अमृत माया

जय मधुर झंकार गुञ्जन ग्रन्थि पल्लव के प्रणेता
जयति ग्राम्या के कुशल शिल्पी ऋता अतिमा रचयिता
पद्मभूषण से अलंकृत जय कवे ! लोकायतन के
ज्ञान पीठाधिप पुरस्कृत जय रवे ! स्वर्णिम किरण के

जय प्रगति के प्रखर साधक जय मनुजता के पुजारी
जयति अन्तश्चेतनामय सृष्टि कण-कण के बिहारी
आपका अरविन्द दर्शन काव्य में मुखरित हुआ है
आपकी पावन कलामय लेखनी ने जग छुआ है

चन्द्रमा को चाँदनी से आपका है प्यार जैसा
चींटियों को भी मिला है विश्व बन्धो ! प्यार वैसा
बादलों में आपके यदि भाव मंडराते रहे हैं
जलधि में भी वे बिना संकोच लहराते रहे हैं

आज के वातावरण में तव सुयश छाया हुआ है
किन्तु मेरा चित्त चातक आज घबराया हुआ है
स्वाति जल-कण छोड़ इसकी प्यास बुझ पाती नहीं है
जलद कविवर पंत शीतल छांह मिल पाती नहीं है

आज का हिन्दी जगत् नैराश्य में डूबा हुआ है
आपके दर्शन बिना यह कर्म से ऊबा हुआ है
आप अन्तश्चेतना बन प्रेरणा यदि दे न पाये
आपसे आदर्श पा यदि गीत कवियों न गाये

तो जयन्ती पर्व का उत्सव अधूरा ही रहेगा
कल्पना कैसे खिलेगी काव्य रस कैसे बहेगा
इसलिए श्रद्धा सुमन श्रद्धेय चरणों पर चढ़ाते
आप हम सब के हृदय में हों प्रतिष्ठित मुस्कुराते
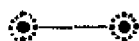
मुक्तक

जब मानव के अन्तस्तल में कोई भाव उमड़ आता है
हृदय सिन्धु में स्मृतियों का जब कोई मेघ घुमड़ जाता है
सूने पथ में किसी पथिक का जब कोई सम्बल हरता है
तब वाणी का वरद् पुत्र कवि तन्मय हो कविता करता है
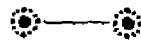
मुक्तक

ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ लोलुपता
है अधर्म और राष्ट्र विघाती
प्रेम सूत्र का नाम धर्म है
यही धर्म है अपनी थाती
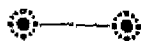
कुछ सम्मतियाँ

युवा कवि प्रिय वागीश दिनकर का रचना-संग्रह "शब्द शब्द पांचजन्य" पाण्डुलिपि के रूप में देखने को मिला। भाषा की परिष्कृति, भावों की उदात्तता, गुणों का सन्निवेश तथा वीररस का सतत प्रवाह देखकर मुझे लगा कि प्रिय वागीश का कवि अपने पिता आचार्य श्री रामनाथ 'सुमन' का प्रतिरूप ही नहीं उनसे आगे बढ़ने की ललक लेकर राष्ट्र की सेवा में लगा है। हिन्दू जागरण की वर्तमान वेला में प्रिय दिनकर निराशा की तमिस्रा को हटाने में, वास्तव में दिनकर का ही कार्य कर रहा है। "उठो जवानों देश बचा लो" तथा "मैं भारत का भाग्य विधाता जग संस्कृति का निर्माता" जैसी रचनाओं में कवि का आक्रोश तथा स्वाभिमान रूपायित हो रहा है। मेरी शुभकामना है कि यह युवा कवि राष्ट्र भावनाओं का अग्रणी गायक बने।

अशोक सिंहल

महामन्त्री-विश्व हिन्दू परिषद्, आर० के० पुरम्, नई दिल्ली-२२

प्रिय वागीश दिनकर एक ऐसे उदीयमान बालारुण का नाम है जिसके उदयकाल में ही मध्यान्ह की तप्त-दृप्त किरणों का आभास मिलता है। भारतीय संस्कृति के सजग-सतर्क प्रहरी के समान उसकी वाणी सुप्त भारतीयों को निद्रालस त्यागने की पुकार लगाती है। उसका लघु काव्य-संग्रह 'शब्द-शब्द पांचजन्य' सुधीजनों के समक्ष आ रहा है, मुझे विश्वास है उसे समुचित स्नेहार्पण से अभिषिक्त किया जाएगा। मेरी हार्दिक कामना है, उसकी भारती भारती मन्दिर की वंदनीय आरती बनें।

डा० ब्रजेन्द्र अवस्थी

(अध्यक्ष हिन्दी विभाग, ने० मे० शि० ना० दास. स्ना० महाविद्यालय, बदायूं)

प्रिय वागीश 'दिनकर' के काव्य संग्रह 'शब्द-शब्द पांचजन्य' की अधिकांश कवितायें मैंने अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में सुनी हैं। मैंने कभी पढ़ा था—'कविता हुकूमत, सिंहासन या कुर्सियों की समर्थक नहीं होती। यदि कविता हुकूमत का समर्थन करेगी तब या तो कविता खत्म होगी या हुकूमत।' जब-जब वागीश को सुना यह मुझे सत्य-सत्य और एक दृढ़ सत्य लगा। जन मानस का दर्द, राष्ट्र वेदना की चीख, व्यवस्था की विसंगति पर ईमानदार की आँखों में जलती चिन्गारी यह सब ठीक-ठीक निकला है वागीश के स्वर से और उनकी कविता से।

हरिओम पंवार,

११ सिविल लाइन्स, मेरठ।

मुद्रक: सुमन प्रिन्टर्स,
[illegible] मार्किट, शारदा रोड, मेरठ। ☎ 24316